लेखिका परिचय

ज्योति नरेन्द्र शास्त्री

पिता - श्री मुकेश यादव

माता - श्रीमती धर्मसीता देवी

पति - आचार्य नरेन्द्र शास्त्री (साहित्यकार)

जन्म - 3 मार्च 1999

शिक्षा - Bstc B.A. M.A.

पता - गाँव करनीकोट, तहसील – मुंडावर,
जिला अलवर (राजस्थान)
पिन कोड – 301427

लेखिका वर्तमान में राजकीय सेवा में शिक्षिका हैं।

आपके आलेख विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

मोबाइल नंबर – 7734074428

Jigyasa Prakashan
Ghaziabad-201 002

Available on
amazon.in

काश्वी

ज्योति नरेन्द्र शास्त्री

काश्वी

(कहानी/कविता-संग्रह)

ज्योति नरेन्द्र शास्त्री

काश्वी (कहानी/कविता-संग्रह)

ज्याति नरेन्द्र शास्त्री

प्रकाशन

जिज्ञासा प्रकाशन (ओ.पी.सी.) प्रा. लि.
ई-८६, स्वर्ण जयंती पुरम,
ग़ाज़ियाबाद -२०१००२ (उ.प्र.)

B-73, R.K. PURAM, GOVINDPURAM,
GHAZIABAD-201015 (U.P)

CONTACT

Whatsapp - 8810598485
Call - 9958426855
E-Mail - jigyasaprakashan2019@rediffmail.com
Website - htpp://jigyasaprakashan.com

PRINTERS

Nidhi Printers Ghaziabad-201 002 (U.P)

ISBN -

© **Jyoti Narendra Shastri**
All Rights Reserved

प्रथम संस्करण : २०२३
मूल्य - रु.२००/-

.....

Title - Kashvi (Kahani/Kavita-Sangrah)
Written by - Jyoti Narendra Shastri
Price - Rs.200/-

समर्पण

यह पुस्तक मेरे पूज्यनीय पिता श्री मुकेश, माता जी श्रीमती धर्मसीता देवी व ससुर स्वर्गीय श्री रामकृष्ण यादव को समर्पित है ।

आभार

मै दैवीय विधान पर विश्वाश करने वाली हु अतः मै ईश्वरीय कृपा विद्या की अधिष्ठात्री माँ सरस्वती, बुद्धि के देवता गणेश, पवनपुत्र हनुमानजी, खाटू श्याम जी, इत्यादि चर अचर देवताओं को प्रणाम करते हुए इन्हे मेरे लेखन में परम सहायक मानती हु की इनकी कृपा से मै कुछ लिख सकने योग्य बन सकी ।

इस पुस्तक के लेखन में मेरे माता–पिता, सास श्रीमती उर्मिला देवी, पति आचार्य नरेन्द्र शास्त्री (प्रतिष्ठित लेखक–यदुराज उपन्यास), चाचा सुभाष यादव, धर्मेन्द्र यादव, चाची श्रीमती मंजू देवी, कांता देवी, बहन कविता अजीत यादव, पूनम यादव, अनिता रामकृष्ण यादव, सरिता धर्मेन्द्र यादव, प्रियंका यादव , दादाजी श्रीमान रामद्त यादव, दादीजी श्रीमती विमला देवी भाई प्रशांत यादव, हिमांशु, प्रियांशु, दिव्यांशु, शक्ति सिंह, कमल बोहरा, जितेंद्र यादव, इत्यादि परिजनों तथा मेम पूजा मीणा, ज्योति साहू मेम, विशाखा साहू, हिमानी, जीजाजी नितिन यादव, मोहित यादव, पवन यादव, इत्यादि कुटुम्बी जनो का मार्गदर्शन लिखने के लिए समय–समय पर मिलता रहा तथा इन्होने यथासमय मेरे लेखन को सहार कर मुझे लिखने के लिए सदैव प्रेरित किया ।

ज्योति नरेन्द्र शास्त्री

लेखिका की कलम से

मेरे कहानी/कविता संग्रह ''काश्वी'' को पढ़ रहे पाठको को सादर नमस्कार। ''काश्वी'' से पूर्व आप सब मेरे लेखन से परिचित थें। देश की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में मेरे छपने वाले आर्टिकलों, लेखो आदि को आपने सराहा तथा अच्छा फीडबैक देकर मुझे भी लिखने के लिए ही प्रेरित करते रहे। ''काश्वी'' (पुस्तक का नाम) एक स्त्री की कहानी दर्शाता है जो हर तरीके से परिपूर्ण है। पतीव्रत धर्म की पराकाष्ठा के साथ–साथ उसमे एक आदर्श गृहिणी के लक्षण सम्पूर्ण रूप से नज़र आते है। पुस्तक को महत्वपूर्ण बनाने की दृष्टि से इसमे इसमे दस–ग्यारह चुनिंदा कहानी तथा हर विषय पर 40 के लगभग कविताओं का प्रकाशन किया गया है। आशा व विश्वाश है की हिंदी साहित्य जगह में मेरे लेखन को जिस भाव से मैने लिखा है उसी भाव से आप सब पढ़कर मेरे लेखन को यथास्थान दोगे ।

ज्योति नरेन्द्र शास्त्री

अनुक्रम

क्रम शीर्षक **पृष्ठ संख्या**

काश्वी....9
कच्चे रिश्तो की पक्की डोर....14
रिश्तो की किस्त....15
मेरे हनुमान 18
मास्टरजी का बेटा (कहानी)....20
मेरी सायरा यात्रा (यात्रा वृतांत)....23
रुखसत....27
उम्र की दस्तक (संस्मरणात्मक कहानी)....32
फर्स्ट एट्रेक्शन 34
कन्फर्म टिकट 38
ससुराल का आँगन 40

कविताएँ

नूतन वर्ष आया है....43
राव तुलाराम 44
ए चाँद अगले बरस फिर आना....47
चंद्रयान 3....49
पिता का त्याग....50
चाय और तुम....52
बचपन के दिन सुहाने....53
नानी....55
मुलाकाते मोहब्बत की....57
कभी जो हमारी एक आह से....58
सरहद की दूरिया....59
इश्क का टूटा पत्थर....60
दिया और बाती 61
मै एक शिक्षिका हुँ 62
दस्तक–ए–वक़्त....63
पति और पत्नी....64
प्रवासी बेटा....66
तुमसे जुदा होकर....67
ससुराल की पहली होली....68

चेहरा तुम्हारा....70
नाम तुम्हारा....71
भावना....72
मैं आर्यावर्त की हिंदी हुँ 73
पुराना ख़त....74
नग्न हुई मानवता....75
मेरा इंतज़ार....76
मेरी ख़्वाहिशे 77
घाव और लगाव....78
दिल्ली हुई पानी–पानी....79
खाली बरामदा....80
न्यूज कवरेज....81
बूढ़े होते जा रहे है गाँव....82
सपनो का बोझ (कविता) 83
भारत भूमि (कविता)....84
साजन का दीदार....86
मानसिकता का गुलाम....87
ससुर जी....88
माँ 90
ख़ुशबु और ख़्याल तुम्हारा....92

काश्वी

आज राम अपना सब कुछ गंवा चुका था । ऑफिस , खेत यहाँ तक की घर तक को भी बेचने की नौबत आ चुकी थी । अपने हाथों को माथे पर सटाये राम कुछ सोच रहा था । उसे हर चीज एक–एक करके याद आ रही थी। ठीक 10 साल पहले उसका विवाह काश्वी से हुआ था । शुरुआती तौर पर काश्वी आलस्य से भरी हुई एक लड़की थी । काश्वी के पिता शहर के एक धनाढ्य व्यक्ति थें । ग़रीबी की आबो हवा भी उसे छु नही पाई थी । घर के छोटे काम से लेकर बड़ा काम करने तक घर मे नौकर–चाकरो की कमी नही थी । बड़ी मुश्किल से काश्वी की मम्मी संतोष देवी ने उसको खाना बनाना सिखाया था ताकि कल के दिन उसकी शादी होने पर ससुराल से उलाहने तो नही आए । रमाकांत के 3 लड़को के बीच एक लड़की ही थी काश्वी । पिता का पुत्री पर नेह कुछ ज़्यादा ही होता है इसी कारण जब संतोष देवी अपने बेटी को कुछ घर का काम सीखने को कहती तो पिता यह कहकर रोक लेते की ''अभी इसकी उम्र ही क्या है'' । इस कारण अभी तक काश्वी खाना बनाने के अलावा अभी तक कुछ सीख ही नही पाई थी । बीतते वक्त के साथ काश्वी अब 22 साल की हो गई थी । घर मे आने वाला कोई भी मेहमान माता पिता को काश्वी के विवाह के लिए टोक ही देता था, ''की अब तो इसके विवाह की उम्र भी हो चुकी है, अब तो इसके हाथ पीले कर ही देने चाहिए'' ।

राम एक दिन रमाकांत के ऑफिस के पास बैठा अख़बार पढ़ रहा था , रमाकांत जी जैसे ही अपने ऑफिस से बाहर निकले उनके पुराने मित्र हरिमोहन जी मिल गये । दोनो मित्र गले लगकर मिल रहे थे और इसी के चलते उन्होंने अपनी जो अटैची नीचे ज़मीन पर रखी थी उसे वे बातो ही बातो मे भूल गये थे । अख़बार पढ़ते हुए राम की निगाह उस दृश्य पर एक बार पड़ी थी । दोबारा जब निगाह गई तो अटैची थी लेकिन वो सज्जन महानुभाव नही थे । वो उनके लिए अपरिचित थे । राम ने अटैची उठा ली । और आसपास के दुकानदारों से पता करने लगे की अभी जो व्यक्ति सफेद शर्ट मे टाई लगाए हुए थें वे कौन थें । बड़ी मशक्कत से एक दुकानदार ने उनका पता बताया ।

अटैची के खो जाने से रमाकांत जी बड़े विचलित थे । उन्हे खुद पर बड़ा गुस्सा आ रहा था , ना वो अटैची नीचे रखते और ना ही वो खोती । पुरा परिवार परेशान था । नकदी के अलावा उसमे उनके कुछ जरूरी काग़जात थे। तभी अचानक दरवाजे पर एक नवयुवक ने अटैची के साथ दस्तक दी ।

रमाकांत जी घर मे है नवयुवक ने घर मे घुसते ही प्रश्न किया । रमाकांत जो अभी तक सोफे पर बैठे हुए थे अचानक से उठकर आते है , हा मै ही रमाकांत हु नवयुवक के चेहरे की तरफ देखते हुए बोले । अटैची को हाथो से पकड़ कर लटका रखा था इस कारण उस पर ध्यान नही जा पाया । 3–4 दिन पहले आपकी ये संदूकची रह गई थी इसे लौटाने आया था । सहसा रमाकांत की आँखो मे एक चमक आई । सारी चिंताएं छु मंतर हो गई । अटैची को हाथो मे ले लिया और खोल कर देखा तो संतोष हुआ । युवक जाने लगा । रुको ! युवक रुक गया । धन्यवाद ! तुम नही जानते तुमने मुझ पर कितना बड़ा उपकार किया है । क्या तुम जानते थे की इस अटैची मे क्या था ? नही, मैने इसे खोलने का प्रयत्न नही किया, युवक ने स्पष्ट उत्तर दिया।

शाबाश ! जीते रहो , तुम जैसे युवकों से ही देश आबाद है । तुम्हारा नाम और पता तो बताते जाओ। राम ने एक कागज पेन मंगवाकर अपना पता लिख दिया और चला गया।

रमाकांत ने लड़के के बारे मे पता किया वह एक मेहनती और ईमानदार लड़का है। लेकिन हर जगह घूसखोरी के चलते उसे अभी तक नौकरी नही मिल पाई। जिनका कद ऊंचा होता है वह अपने अहसान के तले किसी खुद्दार आदमी का कद गिराया नही करते इसी के चलते रमाकांत जी ने अपने ऑफिस के काम के लिए अखबारों मे प्रेस विज्ञप्ति निकलवा दी । काम की जरूरत के चलते राम भी उसमे इंटरव्यू देने आया था , रमाकांत भी यही चाहते थें की राम उनके यहाँ काम करे क्योकि अगर वो डाइरेक्टली उसको काम देते तो वो खुद्दारी के चलते नौकरी नही कर पाता। राम के पिता ना होने की वजह से घर के माली हालात ठीक नही थे इसलिए उन्हे काम की जरूरत थी । सब कुछ सोच समझ कर ही रमाकांत जी ने ये खेल रचा था। नौकरी मिलने के बाद राम पुरी मेहनत और ईमानदारी से काम करता । देखते ही देखते उसने सालभर की मेहनत मे ना केवल अपने काम से अपने पद को ऊंचा किया अपितु रमाकांत के दिल मे भी एक विशेष जगह बना ली । ऐसा मेहनती और ईमानदार लड़का रमाकांत ने अपने पूरे जीवन मे नही देखा था। रमाकांत की हार्दिक इच्छा थी की उसकी बेटी काश्वी का विवाह राम से हों। हालांकि दोनो घरो मे कोई समानता नही थी । रमाकांत ने शादी का प्रस्ताव राम के घर भिजवाया , लेकिन कई दिनों तक वो ना नुकुर करते रहे क्योकि काश्वी एक ऊँचे घराने की लड़की थी । उसके लिए उनके घर का आँगन भी छोटा था । रमाकांत के बार–बार जोर देने पर राम की माताजी सुमित्रा देवी ने हामी भर दी।

काश्वी इस शादी को लेकर बिल्कुल भी तैयार नही थी। चुंकि एक तो वह गाँव मे बिल्कुल रही हुई नही थी । दूसरा उसे प्रत्येक काम नौकरो से करवाने की आदत थी । अब वह कहा चूल्हा चौका, झाड़ पूछ का काम करेगी उसने अपने पापा रमाकांत को बोल दिया मै शादी नही कर सकती । मेरी शादी करनी है तो शहर के किसी लड़के से अन्यथा नही करनी मुझे शादी।

रमाकांत भी अपनी जिद्द के पक्के थे । स्पष्ट शब्दों मे कह दिया मैने दुनिया देखी है, बाप हु तुम्हारा, बुरा नही सोचूंगा तेरे बारे मे । माना राम और उसका परिवार हमारे बराबर नही है हैसियत मे, लेकिन वो जो है वो लाखो मे है। सगाई तय करने के बाद नियत समय पर दोनो का विवाह तय कर दिया जाता है। आज वह बेटी से एक वधू बन चुकी थी । आज उसका पहला दिन था, उसे लग रहा था की उसके पिता ने उसकी किस्मत फोड़ दी। क्योकि दहेज लेने से राम और उसके परिवार ने साफ मना कर दिया था। काश्वी को अब यही चिंता सताये जा रही थी की वह इस वातावरण मे खुद को कैसे समायोजित करेगी।

शाम होने तक काश्वी की तबियत थोड़ी सी खराब हों गई थी । उसे ताप देकर बुखार आ गया था । राम को पता चलते ही काश्वी के लिए दवा लाया, दवा लेकर काश्वी कुछ ठीक हुई। लेकिन उसका व्यवहार थोड़ा अजीबो गरीब था। राम को ये समझते देर नही लगी की काश्वी इस शादी से खुश नही है। लेकिन वह भी मानवतावाद का पुजारी था । उसके विचार पुरातनपंथी और आधुनिकतावाद दोनो से मेल खाते थे । वह एक लड़की जिसकी शादी महज 24 घंटे पहले हुई है , जिसने उस आँगन को छोड़ा है जिसमे वह जीवन के सतरह–अठारह साल गुजार के आई है । घर की यादे भी तो पीछा कहा छोड़ती है । एक सतरह साल की लड़की से एक तीस साल की औरत जितनी समझदारी से अपना घर चलाती है , जिस तरीके से रहती है ऐसी उम्मीद नही की जा सकती । घड़ी की तरफ देखा । घंटे वाली सुई 10 बजा रही थी । तुम थक गई होगी काश्वी । कुछ खाया या नही । काश्वी ने कुछ जवाब नही दिया । घर बात की या नही , कहते हुए राम ने काश्वी के मोबाईल से रमाकांत जी को फोन किया। रमाकांत जी के फोन उठाते ही राम ने फोन काश्वी को देते हुए कहा लो तुम्हारे पापा बात कर रहे है। अपने पापा से बात करके काश्वी का मन कुछ हल्का हुआ । राम की तरफ देखकर एक हल्की सी मुस्कुराहट दी जो शायद आभास करा रही थी की काश्वी अब उतनी दुःखी नही है । ये सच भी था। "स्त्रिया पुरुषो मे एक सुरक्षा का भाव चाहती है वो ये सोचती है की जितना सुरक्षित मै खुद को पापा के साथ महसूस करती थी, सुरक्षा के भाव सेउतना ही सुरक्षित खुद को पति के साथ

महसूस करूँ" । इसी सुरक्षा के निश्चिंतता भरे भाव के बाद स्त्रिया पुरुषो पर अपना सर्वस्व लुटा देती है। केवल एक दिन की देखभाल से काश्वी यह निर्णय नही कर सकती थी की वह राम के साथ खुद को कितना सुरक्षित महसूस करती है, उसे रिश्ता बनाने मे वक्त चाहिए था। क्योकि मजबूत धागे और मजबूत रिश्ते दोनो को बुनने मे अधिक समय लगता है ।

राम ने काश्वी को आश्वस्त करते हुए कहा ''मै जानता हु काश्वी तुम जिस परिवेश मे रही हो,यहां तुम्हे ऐसा परिवेश नही मिल रहा । ना तुम्हे इतना काम करने की आदत है और ना तुमने कभी ऐसी हालात मे काम किया । मै पुरी कोशिश करूंगा की तुम्हे दुनिया की हर खुशी देने की'' । राम हर सम्भव कोशिश करता की काश्वी को कोई गम नही हो, वह और उसका परिवार हर तरह से काश्वी का ख्याल रखने की कोशिश करते । किसी का ह्रदय परिवर्तन करना हों तो खुद से ज्यादा सामने वाले का ख्याल रखना शुरु कर दो, यही हुआ । शादी के तकरीबन एक महीने बाद काश्वी पुरी तरह से बदल चुकी थी । सुबह के 7–8 बजे उठने वाली काश्वी अब सुबह के 4 बजे उठने लग गई थी । अलार्म बजने के बाद भी अगर कभी नींद ज्यादा आने की वजह से 10–15 मिनट लेट भी आँख खुलती तो वह खुद को कोसती थी, मेरी आँख क्यो नही खुली । उठते ही धरती माता के साथ पति के चरण स्पर्श करते ही सास, दादी सास सबको प्रणाम करना । उनके उठने से पहले बिस्तर मे उनकी चाय तैयार करना ये सब काश्वी की आदत बन चुकी थी । शाम को ऑफिस से लौटने के बाद राम के पैर दबाना , सास के पैर दबाना । काश्वी ने ना केवल अपने पति का अपितु अपने सास सहित सबका दिल जीत लिया था । अब मोहल्लेभर मे उसकी अच्छाईयो के चर्चे होने लगे थें । लोग उसकी दात देने लगे थे बहु हो तो सुमित्रा की बहु जैसी ।

राम ने थोड़े दिन बाद अपना नया व्यवसाय शुरु किया। मेहनत , काबिलियत और ईमानदारी की वजह से व्यवसाय बहुत अच्छा चलने लगा। अपनी मेहनत से उसने थोड़े दिन मे ही व्यवसाय के 4 चाँद लगा दिये थें। नया घर खरीदा, नई गाडी, नया बंगला सब कुछ नया था । जीवन मे जिन चीजो की कल्पना राम ने नही की थी वो भी उसे मिल गई थी । राम के एक बेटी हुई जिसका नाम बड़े दुलार से किरण रखा। राम का अपनी पुत्री से स्नेह ज्यादा ही था। जिस कारण ऑफिस जाना प्रायः कम हों गया । दुनिया की तमाम खूबिया राम मे मौजूद थी। अनुशासन, मेहनत, ईमानदारी, विद्वता। कमी थी तो केवल इतनी सी वह सबको अपने जैसा समझ लिया करता था। राम के इसी भरोसे और विश्वाश का फायदा उसके सहकर्मी उठाया करते थे। काश्वी ने कई दफा उनको बोला भी था आप किसी पर जरूरत से ज्यादा भरोसा मत किया करो। किन्तु राम हर बार उनकी बातों को मजाक में टाल जाया करते थे ।

काश्वी तुम भी, वो मेरे सहकर्मी है, क्या कोई अपने मालिक से दगाबाजी करता है । टेलीस्टाय कम्पनी के एम डी. सुरेन्द्र व सुपरवाइजर ने पीठ पीछे से मार्केटिंग करके कम्पनी की नीव को खोखला कर दिया था । कम्पनी खड़ी तो दिखती थी लेकिन उसकी ईट–ईट कर्जदारो की मेहरबानी की मोहताज थी । देर से ही सही राम साहब ने पत्नी की बातो पर भरोसा करके थोड़ा सावधानी दिखाई तो उन्हे इन सब बातो का पता लगा । एम. डी. और सुपरवाइजर को बाहर का रास्ता दिखा दिया गया । लेकिन आग लगने के बाद कुँवा खोदने से क्या फायदा ? कम्पनी उस दौर मे खड़ी थी जहाँ कर्जदारो द्वारा नीलामी कभी भी हों सकती थी । इस बात का अंदेशा राम को होते ही उसने कुछ बहाना बनाकर काश्वी, को उसके मायके भेज दिया था । वह नही चाहता था काश्वी उन सब चीजों को देखे । आज काश्वी को गये पूरे बीस रोज हों गये थे । परसो जमीन , मकान सबकी कुर्की होनी थी।

एक–एक बाते उसकी मस्तिष्क मे आ रही थी । काश्वी उसे कितना समझाती थी लेकिन उसने उसकी एक नही मानी । अब वह काश्वी से किस मुँह से बात करेगा । इतनी बड़ी रकम का वह इंतज़ाम कहा से करेगा । दोस्तों व रिश्तेदारो ने पैसे के लिए 2 टुक मना कर दिया । कही से कोई पैसे आने की उम्मीद नही । मस्तिष्क गहन चिंतन मे, आँखे शोक सागर मे डूबे हुए थे तभी महसूस हुआ किसी ने कंधे पर हाथ रखा हो । गर्दन उठाकर बगल मे देखा तो काश्वी थी । मगर ये क्या ? आज काश्वी के शरीर पर एक भी गहना नही , यहां तक की नाक की नथुनी भी नही थी । अन्यथा शरीर पर इतने गहने हुआ करते थे की धन की देवी ही प्रतीत होती थी । राम कुछ बोल पाते इससे पहले काश्वी ने उनके हाथ मे एक पोटली पकड़ाते हुए कहा ''चिंता मत कीजिये । इस पोटली मे मेरे गहने व जीवनभर की संचित कमाई है, आप इससे अपनी जमीन व व्यवसाय को कुर्की होने से बचा सकते हो''। लेकिन काश्वी तुम्हारे गहने !

मेरी असली सम्पति आप हो , जब आप सही हों तो सब होता रहेगा ।

तुमने मुझे खरीद लिया काश्वी ! अब तक मै तुम्हे देवी मानते आया था, अब से तुम्हे धन की देवी मानूंगा ।

कच्चे रिश्तो की पक्की डोर

दीपावली के दिन की खरीदारी करने भाई के साथ में हर बार की तरह बाज़ार गई हुई थी । बाज़ार की सजावट भी जैनेंद्र कुमार की बाज़ार दर्शन सिद्धांत की तरह काम करती है । तरह–तरह की वस्तुओं को इस आकर्षक अंदाज में सजाया जाता है कि कोई सामान नहीं लेना भी चाहता है वह भी चकाचौंध के वशीभूत होकर कुछ ना कुछ ले ही लेता है । बाज़ारीकरण का सीधा सा सिद्धांत है जो दिखता है वह बिकता है। सब लोग अपने–अपने पसंद और जरूरत का सामान ले रहे थे । त्यौहार का दिन था तो दुकानों पर भीड़ का होना स्वभाविक था। संयोगवश मैं जिस दुकान पर गई उस पर भीड़भाड कुछ ज्यादा ही थी तो मुझे थोड़ा इंतजार करना पड़ा। एक वृद्धा माई जिसकी उम्र तकरीबन 80 के वर्ष के करीब रही होगी जिनको मैं थोड़ा बहुत जानती थी वह अपने बेटे बहू से अलग रह रही थी , वह एक विधवा औरत थी ।

दीपावली की जरूरत का लगभग सब सामान लेने के बाद दुकानदार ने कहा माई आपने जो सामान बोला था सब दे दिया , अब और क्या चाहिए ? एक फूलमाला की तरफ इशारा करते हुए बोली फूल वाला हार चाहिए बेटा । इसका क्या करोगे माँ दुकानदार बोला ? बेटा नारायण के बिना लक्ष्मी की पूजा अधूरी होती है और मेरे नारायण यानी तुम्हारे बाबा तो है नहीं तो उनकी तस्वीर पर ये हार चढ़ाकर उनकी पूजा करुंगी । मेरी आंखें डबड़बा गई । लेकिन एक सवाल बारम्बार कचोट रहा था की रिश्ते कि नाजुक डोर के इस मजबूत रिश्ते को लोग बीच मझधार में क्यों छोड़ जाते हैं और किसके भरोसे और वह भी उम्र के इस पड़ाव पर जब हमे सबसे ज्यादा उसकी जरूरत होती है।

रिश्तो की किस्त

तुम्हारी तनख्वाह आ गई होगी होगी ..... आज पुरी एक तारीख हो गई है इस महीने तुम्हारी बेटी पर खर्च किये तीन हज़ार रुपये भेजने है साक्षी को फोन पर उसकी बहन जमना ने बोला । तन्खवाह तों अभी नहीं आई और इस महीने कटौतिया भी थोड़ी ज्यादा है सो इस कारण से मै इस महीने पूरे 3 हजार तों नहीं भेज सकूंगी, कुछ कम भेज दूंगी , अगले महीने पूरे भेज दूंगी।

पैसे कोई झाड़ पर नहीं उगते जमना ने उसकी बात काटते हुए कहा। यहां भी सौ खर्चे है , कभी कुछ तों कभी कुछ । जब तुम्हारी बस की ही नहीं थी तों क्यो अपनी बेटी को इतनी महंगी कॉलेज में एडमिशन दिलाया। ये तों शुक्र है मै वही खर्चा लेती हु जो उपर का होता है। रहन–सहन और खाने का खर्च लु तों तुझ पर तों पहाड़ टूट पड़े ।

जमना के फोन रखने के बाद साक्षी की आँखो में आंसु थे । उसे एक ऋ एक करके सब चीज याद आ रही थी । कितने चाव से माँ बाप ने शादी की थी । शादी के कुछ दिनों बाद ही साक्षी की जोइनिंग एलडीसी के पद पर हो गई थी । यह नौकरी हालांकि उसके स्तर की तों नहीं थी किन्तु परिवार की खुशी और परिवार की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए उसने जोइन कर लिया था । विवाह के कुछ समय बाद एक बेटा और एक बेटी हो जाने के कारण पढ़ाई से लगभग ध्यान बंट गया था । इस कारण पुरा ध्यान बच्चों की परवरिश पर देना पड़ा । कुछ समय बाद उसके पति को एक गंभीर बीमारी हो गई जिस कारण उन्होंने अपनी नौकरी छोड़कर अपने पति की दवा दारु में ही शेष समय बिता दिया । होनी को कुछ और मंजूर था , साक्षी के पति अनुराग छह महीने चले इलाज के बाद भी भगवान को प्यारे हो गयें । ससुराल की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ थी किन्तु दवा दारु में काफी रुपये खर्च हो गयें थें । देवर–जेठ और सास–ससुर ने उसे कुलक्षणा कहकर की आते ही हमारे बेटे को खा गई घर से निकाल दिया । साक्षी चाहती तों प्रॉपर्टी का आधा हिस्सा भी ले सकती थी किन्तु रिश्ते निभाने की चाह ने सम्पति के लालच को उस पर हावी नहीं होने दिया । साक्षी अपना ससुराल छोड़कर अब मायके में आ गई थी ।

साक्षी प्राइवेट जॉब करके अपने बच्चों , छोटे भाई और अपनी बहन जमना की पढ़ाई का खर्चा चलाने लगी । अपने भाई और बहन की पढ़ाई खातिर उसने अपनी खुशियों की बली दे दी । उसने एक एलडीसी की प्राइवेट जॉब पकड़

ली थी । जॉब के बाद जो भी समय बीतता साक्षी उसमे पूरे मन से पढ़ाई करती । कुछ दिनों की मेहनत के बाद साक्षी का फिर से एलडीसी के पद पर चयन हो गया किन्तु उसी समय जमना भयंकर बीमार पड गई । जिस समय जमना बीमार पड़ी साक्षी की माँ और भाई तीर्थयात्रा पर गयें थें । साक्षी को जॉइन करने के लिए पूरे पंद्रह मिले लेकिन जमना हॉस्पिटल में एडमिट थी उसकी तबियत ठीक ना होने के कारण साक्षी उसे छोड़कर कही जा भी नहीं सकती थी क्योकि अगर वो अपनी बहन को छोड़कर जॉइन करने जाती तों बेमानी होती । लोग तंज कसते की देखो छोटी बहन तों जिंदगी और मौत से जूझ रही थी और बड़ी बहन को सरकारी नौकरी की पड़ी थी । इस बार भी साक्षी ने अपनों की खातिर अपने घर पर दस्तक देते सौभाग्य को ठुकराकर दुर्भाग्य का हाथ थामा । कुछ दिनों बाद जमना भी अच्छी हो गई । ठीक होते ही जमना ने कहा तुम्हारा यह अहसान मै जिंदगी भर नहीं भूलूंगी । पढ़ा लिखाकर साक्षी ने जमना की शादी एक अच्छे घर में कर दी । कुछ दिनों तक सब कुछ ठीक चलता रहा किन्तु थोड़े दिनों बाद जमना के तेवर बदल गयें । अब उसे अपने विनोद की अस्सी हजार की भारी भरकम तन्खवाह के सामने अपनी बहन साक्षी की 9 हजार की तन्खवाह मामूली मालूम पड़ती थी। उसने दूरिया बनाा शुरु कर दिया ।

वक्त का पहिया घूमता गया । अब साक्षी की बेटी पूरे सतरह बरस की हो गई थी । 12 वी मैथ साइंस से करने के बाद साक्षी की बेटी तमन्ना को बी. सी. ए. मे बैंगलोर की एक प्रतिष्ठित यूनिवर्सिटी में एडमिशन मिल गया । साक्षी की इतनी गुंजाइस नहीं थी की वह अपनी बेटी को बैंगलोर जैसे महंगे शहर में पढ़ा सके । फीस के पैसे तों फिर भी स्कॉलरशिप से मिल जाते किन्तु 3 साल चलने वाले इस कोर्स के लिए रहने का खर्च साक्षी के बजट से बाहर था । उसने सोचा यही एडमिशन दिला दु किन्तु साक्षी की बहन जमना जिसकी पति की पोस्टिंग आइटी बैंगलोर में थी । साक्षी को जमना ने कहा हमारे साथ रहने में क्या हर्ज है । तमन्ना जैसी तुम्हारी बेटी वैसे ही मेरी बेटी । हमारे पास ही रह लेगी । वैसे भी मेरी बेटी नहीं हसी तों तमन्ना को मै अपनी बेटी की तरह रखूंगी । साक्षी का दिल तों गवाही नहीं दे रहा था , वह जमना के बदलते. स्वभाव से परिचित थी किन्तु अपनी मम्मी के कहने पर की जमना के वहा तमन्ना को भेजने मे हर्ज ही क्या है , तैयार हो गई ।

कुछ दिनों तक सब ठीक चलता रहा । धीरे–धीरे जमना ने साक्षी पर अहसानो की चादर तानना शुरु कर दिया । उसे तमन्ना के रहने , खाने से एक्स्ट्रा खर्च तक गिनाना शुरु कर दिया । कॉलेज जाते समय स्कूटी से इतना तेल लगता है , इतने थी स्टेशनरी आती है इत्यादि ।

काफी देर तक रोने के बाद साक्षी उठ खड़ी हुई । अब वह खुद को और कमजोर , विवश व लाचार नहीं देखना चाहती थी । उसने सोच लिया था अब वह मामूली पहचान के साथ नहीं रहेगी । यू. पी. एस. सी. की तैयारी करके वह खुद को स्थापित करेगी । फार्म भरने की आखिरी उम्र में से उसकी उम्र महज 3 वर्ष कम थी । उसने सोच लिया था अब वह जी तोड़ मेहनत करेगी , लेकिन हार नहीं मानेगी । अब तक वह खुद को लुटाकर रिश्तो की किस्त ही तों भरती आई थी । अब वह खुद को और नहीं लुटायेगी । रिश्ते कोई एक तरफा थोड़ी होते है , दोनो तरफ से निभाए जाते है । सारे रिश्ते मै ही क्यो निभाऊ । सब कुछ अच्छा या बुरा मै ही क्यो सोचु । 2 साल की हाड तोड़ मेहनत के बाद आज साक्षी ने यू. पी. एस.सी . परीक्षा में देशभर में आठवा स्थान प्राप्त किया था । हर कोई उससे मिलने को लाइन में लगा था जिन में एक उसकी बहन जमना और जीजा विनोद भी थें ।

मेरे हनुमान

अपने पति मनसहाय पंडित की मृत्य के बाद भगवती जैसे तैसे अपने परिवार का पालन पोषण कर रही थी । परिवार मे मनसहाय की मृत्यु के बाद उनकी आखिरी निशानी के रूप मे उनका पुत्र राममूर्ति ही शेष रह गया था । क्या कुछ नहीं किया था भगवती ने मनसहाय के इलाज के लिए । लेकिन सब बेकार गया । मनसहाय का किसी समय समस्तीपुर समेत आसपास के गाँवों मे डंका बजता था । बड़े बड़े सेठो की हवेलियो पर पूजा के लिए एडवांस में बुकिंग रहती थी । कोई ऐसा ब्राह्मण , वेदवेता नहीं था जो मनसहाय की विद्वता के सामने खुद को टिका सके । वक्त का पहिया घुमा । पंडित मनसहाय ज्यादा बीमार रहने लग गये । घर में जो कुछ जोड़ा हुआ था सब उनकी बीमारी में चला गया । मनसहाय क्या गया , घर की तों समृद्धि ही चली गई । एन वक्त पर रिश्तेदारो ने आँखे फेर ली । पहले जिस घर में लोगो का हुजूम उमड़ पड़ता था अब भगवती कुछ सहायता ना मांग ले यह सोचकर कोई उसके घर के पास से भी नहीं गुजरता । जब मनसहाय की मृत्यु हुई थी तब राममूर्ति पूरे 2 साल का था । घर का सारा सामान भी बीमारी में चला गया था । मनसहाय की कुछ पुस्तके और उनका बेटा राममूर्ति ये 2 ही कुल मिलाकर उनकी आखिरी निशानी के रूप में शेष रह गयें थें ।

भगवती गाँव मे वार त्यौहारो पर कथा कह आती और उससे जो कुछ मिलता उसी से परिवार का बसर हुआ करता था । राममूर्ति अब सतरह वर्ष का एक समझदार युवक हो चुका था । उसकी माता ने उसको धार्मिक शिक्षा देकर इतना सशक्त बना दिया था की वाल्मीकि कृत रामायण के साथ सैकड़ो ग्रंथ साथ मे ज्ञान विज्ञान का आधुनिक समन्वय उसें याद था

राम और हनुमान के प्रति तों अगाध श्रद्धा उसके रोम ऋ रोम मे बसी हुई थी। एक दिन राममूर्ति पंडित समस्तीपुर के ही किसी मंदिर में गया हुआ था वहाँ के पंडित किशोर चतुर्वेदी किसी जजमान को उनके कष्ट निवारण के लिए हनुमानजी पर सिंदूर लगाकर पूजा अर्चना करने के लिए कह रहे थें । इस संसार मे ईश्वर को मानने का सबका अपना तरीका होता है , कोई उन्हे किसी रूप मे प्रतिष्ठित करता है तों कोई किसी रूप मे । पंडित जी की यह बात राममूर्ति को नागवार गुजरी । वह भी रामायण को पढ़ता आया था , और ईश्वर मे भी अगाध श्रद्धा थी किन्तु उसें लग रहा था आज यह उसके हनुमान जी का गौरव कम करना है । बस फिर क्या था लगा पंडित जी से तर्क करने। पंडित जी हनुमानजी को अर्पित करने के लिए और भी बहुत चीजे

होती है । महावीर पर स्त्रियोचित वस्तु अर्पण करना मुझे नहीं लगता बेहूदगी है । किशोर चतुर्वेदी देने लगे अपने पक्ष मे तर्क । रामायण मे प्रसंग आता है की माता सीता एक बार सिंदूर लगा रही थी, हनुमानजी ने पूछा की माता ये पदार्थ क्या है जो आप अपने मस्तक के बीचो बीच (मांग में) लगा रही है माता सीता ने जवाब दिया वत्स ये सिंदूर है इससे स्वामी यानी पति प्रसन्न होता है । बस फिर क्या था हनुमानजी ने अपने सारे शरीर पर सिंदूर लगा लिया जिससे प्रभु राम प्रश्न हुए । अपने कथन के पक्ष में तर्क देने के बाद किशोर पंडित राममूर्ति के तर्क का इंतजार कर रहे थें ।

पंडित जी रामायण समेत हमारे धर्मग्रंथो मे भयंकर मिलावट हुई है हनुमानजी जिनके लिए अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं, दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्। सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं, रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि। जो अतुलित बल की राशि है , जिनका शरीर सोने की कांति वाला है , जो ज्ञानियों मे अग्रगण्य है । इसके साथ मनोजवं मारुततुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्. वातात्मजं वानरयूथमुख्यं, श्रीरामदूतं शरणं प्रप॓॥ जो बुद्धिमानो मे वरिष्ठतम है। 4 वेद जिनको जबानी याद है । क्या उस महापुरुष को सिंदूर के बारे मे मालूम नहीं होगा । या फिर उन महापुरुष ने कभी अपने घर मे अपनी माँ अंजना को सिंदूर लगाते नहीं देखा होगा । गोस्वामी तुलसीदास की लाल देह लालीलसे, अरुधरिलाल लँगूर।

बज्र देह दानव दलण, जय जय जय कपिसूर। उपरोक्त पंक्तियों मे लाल देह से तात्पर्य सिंदूर लगाने से नहीं वानरो की देह का सामान्य रूप से रंग ही ऐसा होता था इस संदर्भ मे कही गई है । विशाल समुद्र को लाँघकर अतिकम्पन , कालनेमी जैसे भयंकर राक्षसों के त्राण से पृथ्वी माता को भयमुक्त करने वाले महापुरुष के लिए ऐसी चीजे मुझे नहीं लगता शोभायमान है । उन्हे अर्पित करने के लिए वीरो के योग्य अनेको वस्तुए है वो भेंट करो तों शायद महावीर जैसे वीरो का भी औचित्य वीरता मे रह सके । बाकी तों ईश्वर को मानने का सबका अपना तरीका है ही गलत चीज को अगर हमने उसी रूप मे स्वीकार कर लिया तों फिर सभ्य और असभ्यो में अंतर क्या शेष रहेगा । राममूर्ति के तर्क जारी थें । मेरे हनुमान संकटमोचक है बस उनके प्रति ऐसा दुराग्रह मुझे स्वीकार नहीं था इसलिए बिना बुलाये शास्त्रार्थ कर डाला । बुरा लगा तों क्षमाप्रार्थी । तब तक एक बड़े मंदिर के सचिव वहाँ आ चुके थें । आपकी जगह यहां नहीं द्विज श्रेष्ठ मंदिर के मुख्य पुजारी के रूप मे है । राममूर्ति ने हनुमानजी को प्रणाम किया । सुन लोगे प्रभु और वो भी इतनी जल्दी । मेरे हनुमान यह तों मुझे नहीं पता था ।

मास्टरजी का बेटा (कहानी)

38 दिनों की गर्मियों की छुटिया समाप्त हो चुकी थी । मास्टरों की छुट्टियाँ बच्चों की छुट्टियों से कुछ पहले समाप्त हो चुकी थी क्योंकि गुरुजनो को अभी प्रवेशोत्सव की भी तैयारी करनी थी । कल से विधालय खुलने थे। सरकारी विधालय के बजाय प्राइवेट विधालय कुछ जल्दी खुल गये थे क्योकि उनके सामने एक सबसे बड़ी समस्या होती है अपने अस्तित्व को बनाने की । उनमे खुद को बेहतर बनाने के लिए कम्पीटिशन की भावना होती है। दो विधालय भी अगर परस्पर आमने सामने हों तो दोनो मे यही महत्वपूर्ण होता है की मेरिट मे कितने बच्चे आ रहे है । कितने बच्चों ने प्रथम श्रेणी स्थान प्राप्त किया । कुछ भी हो कोशिश यही रहती है की कोई बच्चा फेल ना हो, सबके मेरिट आये । अगर क्लास मे एक 2 बच्चे भी मेरिट मे आ जाये तो फिर होता है उनका बाज़ारी प्रदर्शन । बड़े–बड़े बोर्ड व होर्डिंग लगाए जाते है । साथ मे अगर कोई दूसरी स्कूल का बच्चा मेरिट मे आ जाये तो कोशिश रहती है वह बच्चा उनके ही विधालय मे पढ़े ताकि अगली क्लास मे वह मेरिट मे आए तो उसके माध्यम से उस विधालय मे बच्चों की संख्या मे वृद्धि हो सके, कुछ स्कूल वाले तो ऐसे बच्चे के स्नातक स्तर की फीस तक फ्री कर देते है ।

ऐसा नही है की सरकारी विधालयों मे पढ़ाई नही होती । सरकारी विधालय मे लगभग शिक्षक जी तोड़ मेहनत करवाते है । कुछ निक्कमे और नाकारा लोगो को छोड़ दो तो लगभग शिक्षक जी तोड़ मेहनत करवाते है । तथा सरकार द्वारा भी तमाम सुविधाएं विधार्थियों को उपलब्ध करवाई जाती है ।

महिपाल गुरुजी ने आज स्कूल खुलने के उपलक्ष्य मे अपने मोबाईल पर स्टेटस लगाया । अपने बच्चों को सरकारी विधालय मे प्रवेश दिलाकर उनका भविष्य सुनिश्चित करे , यहां आपको अत्यधिक प्रशिक्षित मास्टर मिल रहे है , सरकार आपको ये सुविधाएं दे रही है फलाना ढिकाना । यह स्टेटस जैसे ही उनके मित्र किसन ने देखा तुरंत रिप्लाई कर दिया । गुरुजी जब सरकारी विधालय इतने ही अच्छे है तो आपने अपने खुद के बच्चे को प्राइवेट स्कूल मे एडमिशन क्यो दिला रखा है ? बस फिर क्या था गुरुजी ने तो बात की पूँछ ही पकड़ ली । किशन और महिपाल दोनो अच्छे मित्र थे । बचपन से दोनो साथ ही पढ़े थे । किशन क्लास का पढ़ाई मे सबसे टॉप विधार्थी था । सरकारी नौकरी उसे पसंद नही थी । वह लेखक और कवि था । कवि के अंतस ने कह दिया की सरकारी नौकरी नही करनी , मतलब नही करनी । फिर क्या था ? सम्हाल लिया अपना पुस्तैनी धंधा । वही किराणे की दुकान और हरिपुरा की वही चौपाटी । आज गुरुजी का गुस्सा सातवे आसमान पर

था । गुरुजी को लग रहा था की आज किसन ने सबसे प्रतिष्ठित पद को चुनौती दी है । जबकी यह चुनौती केवल व्यक्तिगत विचारों की थी । गुरुजी को यह भी प्रतीत होता था की एक दुकान चलाने वाला मामूली सा कवि मेरे जैसे शिक्षक के सामने मजाल क्या जो ठहर पाए । जैसे ही छुट्टी हुई गुरुजी पहुँचे सीधा किसन की दुकान पर । ग्राहकी कुछ ज्यादा थी इस कारण किसन महिपाल को नही देख पाया था । मुझे आता देखा नही, अभिवादन नही, चाय पानी तक की नही पूछा । यह बात गुरुजी को कुछ और ही ज्यादा चुभ गई । तेज आवाज मे किसनवा ! ओ किसनवा ! किसन बाहर आता है, उसे इस बात की भनक तक नही होती की कल की बात उसके मित्र के मन मे इस कदर चल रही होगी । पानी का गिलास लाता हुँ, कहकर अंदर जाने को होता है तो गुरुजी कहते है मै पानी पीने नही आया । तुम्हारी जात बिगाड़ने आया हु ।

किसन अहीर बिरादरी का था । अब उसका भी सब्र जवाब दे रहा था । अहीरो मे अक्खड़पन कूट–कुट कर भरा होता है इसके साथ ही सीधापन भी।

क्या बात हो गई गुरुजी , क्यो इतने ताव मे हो ? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुए सरकारी मास्टर के बारे मे अनाप–सनाप कहने की । मास्टरजी मैने क्या अनाप सनाप कह दिया ? मैने तो केवल आपके स्टेटस का रिप्लाई किया था जब आपने लगा रखा था , मैने तो आपसे केवल जवाब माँगा था ।

आप कहते हो आपमें योग्यता अधिक होती है जबकि प्राइवेट मास्टर आपसे कम सैलरी मे पढ़ाते है । उनके कम रुपियो मे पढ़ाने का ये कतई मतलब नही है की उनमे योग्यता कम है । जब आपमें इतनी ही योग्यता होती है तो खुद के बच्चों को क्यो प्राइवेट स्कूलों मे धकेलते हो । अपनी योग्यता पर विश्वाश रखो जब आप दुसरो के बच्चों को पढ़ा सकते हो तो खुद के बच्चों को क्यो नही ? जहा तक बच्चा पढ़े वहां तक की क्लास सरकारी स्कूल मे है । आज सरकारी विधालयों के कम नामांकन होने का यही कारण है गुरुजी खुद के बच्चे को महंगी फीस भरकर बड़ी बोर्डिंग स्कूल मे डालते है और ओरो से उम्मीद करते है उनके बच्चे सरकारी विधालय मे पढ़े । आम आदमी भी यही सोचता है गुरुजी शायद खुद के बच्चे को सरकारी विधालय मे इसलिए नही पढ़ाते क्योकि उनको पता है हम ज्यादा नही जानते । ऐसा मै नही कह रहा हु मास्टरजी । आमजन की भावना कह रही है । मेरा विधालय दूर है इसलिए बच्चे को साथ नही ले सकता । आपका विधालय ही तो दूर है गुरुजी बाकी स्कूल तो हर गाँव मे है । किसन ने बोलना जारी रखा । कल को आपके बच्चे को ही सरकारी नौकरी मिल जाये तो आप उसे कही भी भेज दो । पर गुरुजी बात दरअसल ये है की आपने आपकी सैलरी फिक्स है अगर

कम परिणाम देने पर वेतन कटौती होने लग जाये तो आप अपने बच्चे को क्या पड़ोसी के बच्चे को भी लेकर जाओगे । गुरुजी निरुत्तर खड़े थे । तब तक आसपास भीड़ भी जमा हों चुकी थी । वाह कवि महोदय ! वाह ! भीड़ मे से किसी ने ताली बजाई । उसके बाद तालियों की गड़गड़ाहट सुनाई दे रही थी ।

मेरी सायरा यात्रा (यात्रा वृतांत)

अभी ग्रीष्मकालीन अवकाश समाप्त होने के बाद भी मेरी कुछ छुटिया शेष रही थी । पति भी अनमने मन से गये थे । घर के वातावरण और गाँव की सौंधी मिट्टी मे इतना रम गये थे की उनका जाने का मन ही नही कर रहा था । उन्हे इस संसार मे अपने गाँव से प्रिय शायद ही कोई अन्य वस्तु हो जिससे वो आकर्षित होकर कह दे की ये चीज मुझे मेरे गाँव से बढ़कर लग रही है । हो भी क्यो नही कहा भी गया है ष अपि स्वर्णमयी लंका न मे रोचते लक्ष्मणरू । जननी जन्मभूमि च स्वर्गादपि गरियसी । हों भी कैसे जिसकी जड़े अपने संस्कारो से जुड़ी होती है उसकी सोच ऐसी ही हुआ करती है । घरवालों और उनके मित्रो ने बड़ी फजीहत करके समझा बुझा कर उनके विचलित मन को स्थिर किया । उनके एक मित्र दीपक जिसे वो प्यार से ताऊ कहा करते थे ने समझाते हुए कहा देखो नरेन्द्र शास्त्री जी माना मिट्टी से लगाव ज्यादा है किन्तु अपना पंसदीदा काम विदेश मे भी करना पड़े तो कैसी शर्म । मेरी भी काफी मान मनुहार के बाद उन्होंने इस शर्त पर हामी भरी की ठीक है बाकी

की छुटिया तुम्हे सायरा मे बितानी पड़ेगी । मैने स्वीकृति मे हामी भरी , एक दिन अपने विधालय मे प्रवास करके सायरा के लिए प्रस्थान किया ।

उदयपुर से सायरा की दूरी लगभग 73 किलोमीटर है । मै जोधपुर जाने वाली बस की टिकट लेकर मै बस मे चढ़ गई । बस मे भीड़भाड़ ज्यादा थी । जितने लोग सीट पर बैठे थे उससे ज्यादा लोग तो खड़े थे । एक सज्जन महानुभाव ने मुझे खिड़की वाली सीट दे दी । खिड़की के पास से बाहर के मौसम का नजारा देखने का अपना ही अलग मजा है । यकीनन अगर आप खिड़की के पास बैठकर मौसम का लुत्फ उठा रहे हो तो आपके किराये के सभी पैसे वसूल हो जाते है । बस सर्पिली सी घाटियों मे चलने लगी थी । रोड के दोनो तरफ फैले पहाड़ प्रतीत होते थे मानो किसी एकांतवासी पथिक को गहरी कन्दारो ने आच्छादित कर दिया हो । बस मे यात्रीगण आपस मे परिचर्चा कर रहे थे की इस बार सायरा समेत समूचे मेवाड़ और सीमावर्ती मारवाड़ मे भयंकर वर्षा हुई है । कुछ जगह तो पिछले कई सालो का रिकॉर्ड टूट गया । वैसे तो उदयपुर को झीलों की नगरी कहते है ।

यहां सैकड़ो की संख्या मे आपको झीले मिल जाएगी । फीनलैंड मे भी शायद इतनी झीलों को देखना दृष्टिगोचर नही हो । पहाड़ो की तलहटी मे खाली जगह पर जल के भर जाने से यहां झीलों का निर्माण हो जाया करता है । शांत पड़ी झीलों मे हवा के टकराव से उछलता जल किसी प्रवासी के आने

पर पथ निहारती प्रेयसी का आभास करवाती है । बस पहाड़ी पर जोर लगाकर चढ़ने लगी । शांत पहाड़ियों मे आती साधनों की आवाज़े जैसे लगता था ये वर्षो से किसी को पुकार रही है ।

इस बार मेवाड़ मे पहली बार ऐसी भयंकर बरसात हुई थी की मानसून की टकराहट से पहले यहां के सभी बाँध ओवरफ्लो हों गये थे । आमजन की सुरक्षा के लिए कुछ बांधो के तो गेट तक खोल कर उनसे जल तक निकालना पड़ा ।

सायरा समुद्र तल से लगभग 1000 मीटर की ऊंचाई पर बसा हुआ है । राजस्थान मे अधिकतम ऊंचाई पर बसा हुआ दूसरा छोटा शहर । यहां राजस्थान की तीसरी सबसे ऊँची पर्वत चोटी जरगा है । यहां से कुम्भलगढ़ 35 किलोमीटर । बारह ज्योतिर्लिंगो मे नांदेशमा ज्योतिर्लिंग भी इसी भूमि पर स्थित है । विश्व प्रसिद्ध रणकपुर के जैन मंदिर यहां से मात्र 20 किलोमीटर ी दूरी पर अवस्थित है ।

बस शाम तक सायरा पहुंच गई थी । शाम होते होते यहां बाजार मे एक अलग ही चहल कदमी दिखाई देने लगती है । लेकिन रात्रि आगमन की पूर्व सूचना के यहां सन्नाटा पसर जाता है । दोनो और कुम्भलगढ़ अभ्यारणय के फैले होने के कारण यहां जंगली जानवरो का खतरा प्रायः मंडरा जाता है। भेड़िया, सियार, चौसिंगा, तेंदुआ इत्यादि हिंसक जानवर यहां रात्रि विचरण करते हुए दिखाई देते है । पशुओं के लिए तारबंदी करके एक बाड़ा बनाया जाता है अन्यथा खतरा रहता है की रात्रिकाल मे तेंदुआ आदि हिंसक जानवर पशुओं को उठा ले जाये । रात्रि के 9 बजते ही तो यहाँ के वातावरण मे एक सन्नाटा पसर जाता है । सायरा से रणकपुर तक की 20 किलोमीटर की दूरी मे रुपण माता मंदिर से तकरीबन 16 किलोमीटर की घाटी है । केरल की साइलेंट वैली की तरह रात्रि मे चमकने वाले जुगनूओ के अलावा कुछ नजर नही आता । ना आदमी नज़र आता है ना आदमी की जात । शायद लोगो के रात्रि मे ना आने का एक कारण यह भी हो की जंगली जानवर पहाड़ की ओट मे सड़क किनारे घात लगाकर बैठे रहते है जिससे आक्रमण का खतरा बना रहता है ।

मेरे सायरा आने से कुछ दिनों पहले ही पतिदेव ने मेरे आगमन की सूचना दे दी थी । उनकी स्कूल का प्रत्येक विधार्थी लालायित था । कोई विधार्थी पेन को रंगीन कागज की तह मे लपेट कर मेरे लिए गिफ्ट ला रहा था तो कोई विधार्थी अपने अपने स्तर पर अपनी गुल्लक की सेविंग से गिफ्ट लेकर आया था । मै मना करना चाह रही थी , थोड़ी बहुत झुंझल पतिदेव पर भी आ रही

थी लेकिन कह कुछ नही सकती थी । क्या जरूरत थी बच्चों को बताने की ? ना आप इन्हे बताते ना ये इतने महंगे गिफ्ट लाते । बदले मे मैने भी उन्हे ढेर सारे तोहफे दिये । लेकिन मेरे तोहफे उनके निश्चल प्रेम रूपी तोहफो के सामने कुछ नही थे । वे महज तोहफे नही थे वे उनकी श्रद्धा , प्रेम और उनका गुरुभक्ति प्रदर्शित करने का एक अनूठा तरीका था । यहां के भीलो मे गुरुभक्ति का जो अनूठा समागम देखने को मिलता है वो शायद ही दुसरी कही जगह हो। वे भले ही वर्षो के शोषित , दबे , कुचले हो लेकिन गुरु के प्रति जो पवित्र समर्पण है उसके सामने गुरुभक्ति रूपी निष्ठाओ की कोई कीमत नही ।

सायरा से आठ ऋ दस किलोमीटर दूर एक गाँव है पलासमा । वहा के पदमनाथ मंदिर का यहां की मेवाड़ी रियासत से गहरा संबंध रहा था । वैसे तो सम्पूर्ण सायरा ही मेवाड़ रियासत का अंग था किन्तु प्लासमा पर विशेष कृ पा थी । यही से रास्ता जाता था राजस्थान की तीसरी सबसे ऊँची पर्वत चोटी जरगा का । पर्वत चोटी के नाम पर ही वहा बने मंदिर का नाम जरगा महादेव किया हुआ है । यह पहाड़िया बनास , डोई समेत मग्घा नदी के उद्‌गम स्थल के रूप मे अनुप्राणित है । मंदिर के पास होकर बहता शांत नदी का शोर और वातावरण की शांति जैसे यहां की पहाड़ियों मे सन्यासी मौन होकर तपस्या करता हुआ किसी के आगमन की प्रतीक्षा कर रहा हों ।

पड़ाव का अगला चरण मग्घा गाँव था । किवंदन्तियों व लोकमान्यताओं के अनुसार इस गाँव का प्रारम्भिक नाम मगधा था जो मगध साम्राज्य से संबंधित होने के कारण था । किन्तु इस बात के कोई थोड़ प्रमाण नही होने के कारण इस बात का हम ज्यादा जिक्र नही करते । मग्घा उदयपुर की सीमा का आखिरी गाँव है । इससे आगे खेजड़ी के वे पेड़ है जिनसे कुम्भा व जोधा के मध्य आवल बावल की सन्धि के तहत निर्धारित किया गया था आम जहाँ तक है वो मेवाड़ , खेजड़ी जहाँ से शुरु है वो मारवाड । कोई एक दूसरे की सीमा पर अधिपत्य नही करेगा । ब्रिटानी सत्ता मे गुलामी के लम्बे काल खंड मे भी यहां के लोगो पर ब्रिटिश रेगुलिटिंग एक्ट के तहत अपनी सम्पदा (वन , पेड़ पौधे) इत्यादि पर अपना वर्चस्व मानकर उखाड़ फेकने के लिए उद्धृत हुए ।

यहां सायरा की जो पहाड़िया आपको बरसात के मौसम मे नीलगीरी की पहाड़ियों की याद दिला देगी । तमाम असुविधा होने के बावजूद जिस चीज से सायरा का आकर्षण बनता है वो है यहां की पहाड़िया । जो अरावली पर्वत श्रृंखला का एक विस्तृत भाग है । बरसात के मौसम मे यहां यहां बादल आमतौर पर पहाड़ो के स्तर से नीचे आ जाते है । सुनने मे ये भले ही अटपटा लगे किन्तु ये सत्य है । गर्मियों मे यहां कम गर्मी जबकि सर्दियों मे

सर्दिया भी कम पड़ती है । चौमासे के मौसम मे यहां आपको ज़रूर हर जगह नाले व झरनो का शोर सुनाई देगा । रास्ते मे 2 – 3 महिलाये अपने सर पर भारी गठर लेकर जाती हुई दिखी । मैने उनसे सवाल किया इसमे आप क्या लेकर जा रही हों । उसमे उनके राशन की थी । यहां तो कोई सड़क ही नही दिख रही, आप इधर से किधर जा रहे हो । पगड़ंडियो के सहारे यही कोई तीन किलोमीटर दूर घर है हमारा । बाप रे ! जगह–जगह ऐसी चढ़ाई, उस पर इतना बोझ और वो भी तीन किलोमीटर चढ़ाई मे पैदल चलना। यहां जनसंख्या अधिक विरल है । कुछ परिवार तो बिजली, पानी, सड़क इन सब मुलभुत सुविधाओं से कटे हुए है । मैने पूछा सरकारी नुमाइंदे आकर खैरियत या जरूरतों के बारे मे नही पूछते । वो बोली आते है लेकिन चुनावो के वक्त। तब तक पतिदेव के एक शिष्य उनके लिए आम लेकर आ चुके थे। हर बार कहा करते थे की मग्घा के आम वर्ल्ड क्लासिक आम है । चलो आज इन्हे ही खाकर देखते है। एक आम देखा तो सचमुच बहुत मीठा था । पास खड़ा राजू मुस्कुरा रहा था। आम से ज्यादा मिठास यहां के लोगो के दिल और जुबान मे थी। अच्छा चलते है। तभी बच्चे बोले मेम वसंत ऋतु मे आना, जब ऋतुराज अपने चरम पर होगा और यहां आपको हजारों की संख्या मे खिलखिलाते पलास के फूल मिलेंगे ।

रुखसत

कोलकाता की सेंट जेवियर्स कॉलेज मे दोपहर के समय एलीसा अपना लंच कर कर

रही थी । अचानक फोन की घंटी बजी , सब अपना खाना खाने मे व्यस्त थे इसलिए फोन उठाने की हिमाकत किसी ने नही की । दूसरी बार फोन बजा तो कॉलेज के चपरासी भैरु सिंह ने फोन उठाते हुए कहा , क्या है ? अभी दिख नहीं रहा लंच चल रहा है ।

आप फोन एलीसा को देंगे प्लीज दूसरी तरफ से एक लड़की ने दर्द भरी आवाज मे कहा ।

ठीक है अभी देता हु

एलीसा मेम आपका फोन है, पता नही किसी लड़की का है ।

हैलो एलीसा ने फोन लेते हुए कहा । भाभी जान उधर से एक आवाज़ आती है । हैलो कौन ? अचानक बने इस रिश्ते से एलीसा चौक गई थी । मै नीरजा , थोड़ा सकपकाकर कौन नीरजा ? मै तो कभी इस नाम से परिचित हुई नही ।

मै अनवर की बहन नीरजा । लेकिन कौन अनवर मै किसी अनवर को नही जानती ।

अनवर यानी आपके पति हर्षित ।

चलो मान लेते है वो अनवर है

लेकिन अनवर की बहनो यानी मेरी सारी ननदो को तो मै जानती हु । अब कहा से रिश्ता हो गया ।

मै इस समय थाइलैंड के फी–फी आइलैंड से बोल रही हूँ नीरजा प्रत्युतर देती है। लेकिन वहा तो हमारा कोई सगा नही है । एलीसा ने बात काटते हुए कहा। शायद अहमद ने जरूरी नही समझा इसलिए नही बताया होगा । मै उनके पिता केरान पठान की दूसरी बीवी से पैदा हुई थी । अगर सम्भव हो

तो अहमद भाई जान को फी–फी आइलैंड ज़रूर लाना । अब्बा जान इस वक्त आखिरी रुखसत पर है । जाने से पहले एक बार भाई जान को देखने की ख्वाहिश लेकर बैठे है ।

ठीक है मै मनाकर उन्हे ले आउंगी । एलीसा ने फोन रख दिया ।

अब एलीसा गहन चिंतन मे थी । इस एक नए अजनबी मेहमान के एक कॉल ने थोड़े देर मे ही बहुत कुछ बदल कर रख दिया था । नीरजा के कहे एक–एक शब्द उसके जेहन मे गुंज रहे थे ।

आखिरकार क्या परत है इस रिश्ते की ? कौन है ये केरान पठान ? और क्या रिश्ता है उसका हर्षित से ? और वो नीरजा हर्षित को अनवर भाई जान क्यो बोल रही थी ?

शुरु से एक–एक बाते उसके मस्तिष्क मे कौंध रही थी । ब्रिस्टल यूनिवर्सिटी के एम. बी. ए. प्रोग्राम मे वो पहली बार मिले थे । उसकी एक किताब जो वो लाइब्रेरी की टेबल पर रख कर गई थी, थोड़ी देर बाद जब वह लौट कर आई तो किताब नही थी । तभी सामने की रॉ मे पढ़ते किसी महानुभाव के पास किताब का कवर नज़र आया । एलिसा ने पास आकर घुड़क जमाई की तुमने बिना अनुमति किताब कैसे ले ली ।

किताब ही तो ली है मोहतरमा और वैसे भी मै इसे पढ़कर वापिस कर दूंगा । अपने चश्मे को हटाते हुए वह महानुभाव बोला । एलिसा ने देखा तो सामने एक गोरा रंग का युवक बैठा हुआ था हालांकि वह अंग्रेजो जैसा तो नही लगता था उसका हल्का श्याम रंग उसे गोरो की जमात से भारतीय होने का अहसास करवाता था । भारत के प्रति श्रद्धा के चलते एलिसा ने उसे कुछ नही कहा । उसकी माँ ने जो एक अंग्रेज के साथ ब्रिस्टल मे शिफ्ट हो गई थी भारत के बारे मे काफी बाते बताया करती थी । जिससे एलिसा की दिलचस्पी भारत के प्रति विशेष रूप से जाग्रत हो गई थी । ब्रिस्टल मे वह जन्म से रह रही थी , उसे आज तक हजारों लड़के–लड़किया मिले थे लेकिन उन सबमे उसका भारतीय दोस्त एक भी नही था ।

हर्षित की आँखो पर लगा चश्मा उसके पढ़ाकू होने का अहसास करवा रहा था । एलिसा को समझते देर नही लगी की केवल पढ़ाकू व्यक्ति ही इससे गहरी दोस्ती कर सकता है । एलिसा ने बातचीत शुरु की । धीरे–धीरे दोनो ने एक दूसरे का सारा परिचय जान लिया था । अब दोनो यूनिवर्सिटी की

कैंटीन मे, लंच मे तो कभी लाइब्रेरी मे मिलने लगे थे । हर्षित एलिसा को अपने वतन की ढेर सारी बाते बताया करता था । पापा, दादा–दादी को तो उसने देखा नही था । कुल मिलाकर उसके मम्मी, नाना–नानी और ममरे भाई बहन रिश्ते के नाम पर थे । मतलब खुन का रिश्ता कह सके ऐसा कोई व्यक्ति नहीं था । पापा, दादा–दादी के बारे मे उसने यही बता रखा था की जब वो बहुत छोटा था तभी उनका देहांत हो गया था । उसने तो उनको देखा तक नहीं था । दादा–दादी का प्यार उसे नाना–नानी से तथा माता–पिता का प्यार उसे केवल अपनी मम्मी से मिला था । ममेरे भाई बहनो से तो उसे केवल अपेक्षा ही मिली थी । इस लिए वह पढ़कर अपनी किस्मत बदलने पर तुला हुआ था ।

कैसे उसके नाना उसे कहानिया सुनाया करते थे। राजा वीरभान की कहानी तो आज भी उसे याद थी की किस तरह राजा वीरभान ने बिछड़ने के बाद भी रानी सत्यमंती को ढूंढ निकाला था । वह उसके संघर्ष, उसकी की गई अपेक्षा हर चीज से वाकिफ थी। आज हर चीज उसके जेहन मे आ रही थी । हर्षित का बाप एक पठान कैसे ? एलिसा की शादी के लिए भी उसके नाना–नानी ने बड़ी मुश्किल से परमिशन दी थी। एलिसा के माता–पिता को कोई एतराज नही था। लेकिन एक क्रिस्चन लड़की हिन्दु परिवार मे सेटल होकर रह लेगी इसकी सुनिश्चित्ता होने के बाद ही एलिसा को हर्षित के नाना–नानी ने बहु के रूप मे मान्यता दी थी ।

सात साल सकुशल उनकी शादी को गुजर चुके थे। हर्षित और उसके परिवार ने तो हर बार यही बताया था की हर्षित के पिता एक सड़क हादसे मे मारे गये थे। और गजब तो ये था की घर मे उनकी सिंगल प्रतिमा तक नही थी। आखिरकार क्या ज़रूरत थी उन्हे इतना बड़ा राज छुपाने की ?

क्यो हर्षित अपने पापा का नाम नहीं लेना चाहता था ? और अगर वो जिंदा है तो क्या हर्षित को उनके जिंदा होने की खबर नही मालूम क्या ? और अगर मालूम है तो बिछड़ने की वजह क्या थी ? क्यो उनसे मिलने की कोशिश नही की ? सैकड़ो सवाल एलिसा को किसी नस्तर की भांति चुभ रहे थे। जो भी हो आज वह हर्षित से इस राज़ को बेपर्दा करवाकर रहेगी।

एलिसा अपने मन मे सवालों की एक श्रृंखला बनाये अपने पति हर्षित के आने का इंतजार कर रही थी । हर्षित कलकत्ता शहर के एक जाने माने बिजनेश टायकून थे । एलिसा सेंट जेवियर्स कॉलेज मे प्रोफेसर की जॉब करती थी । हर्षित के आते ही सवालों की बौछार शुरु कर दी। एलिसा को जानने से

ज्यादा तों इस बात की शिकायत थी की हर्षित और उसके परिवार ने उससे झूठ क्यो बोला ? उससे ये बात क्यो छिपाई ?

मम्मी अपनी पढ़ाई के लिए ऑक्सफोर्ड गई थी एलिसा । वही उनकी मुलाकात केरान पठान यानी उनसे हुई जिनका समाचार आपको मिला । केरान पठान कौन है इससे ज्यादा महत्वपूर्ण ये था की मम्मी और उनके बीच नजदीकिया बढ़ गई थी । दोनो ने एक दूसरे को मन ही मन अपना मान लिया था । दोनो ने गुपचुप तरीके से रजिस्ट्रार के यहां शादी कर ली थी । केरान पठान आशिक मिजाज का व्यक्ति था । उसकी नजर मे दो से ज्यादा शादिया हो सकती थी । मम्मी ने खुद को बाँटने के बजाय अकेला रहना पसंद किया । कुछ समय बाद मै पैदा हुआ । बच्चे को पिता का नाम देने के लिए केवल दिखावी तौर पर कागजात बनवा दिये गये नाना जी के किसी जानकार को पिता के रूप मे । अब तुम ही बताओ एलिसा जिस आदमी ने मेरे पैदा होने से पहले मुझे छोड़ दिया मै उसका सम्मान कैसे करू ?

जो भी हो हर्षित वो तुम्हारे पिता है । भले ही उन्होंने तुम्हे कितने कष्ट दिये हो लेकिन तुम्हे उनसे एक बार जरूर मिलना चाहिए । मै नही मिलूंगा एलिसा, हर्षित ने स्पष्ट मना करते हुए कह दिया ।

एलिसा के हजार बार जोर देने पर वह जाने को तैयार हुए । कराबी एयरपोर्ट के लिए टिकट बुक करवा दी । नीरजा को आने की सूचना एलिसा ने पहले ही दे दी थी । कराबी एयरपोर्ट पर नीरजा उन्हे लेने आई । हालांकि कभी मिले नही थे । फिर भी उन्होंने उसे देखते ही पहचान लिया था ।

नीरजा के घर पहुँचे । नीरजा उन्हे सीधा उस कमरे मे ले गई जहाँ केरान पठान अपने जीवन के आखिरी पड़ाव पर पाप और पुण्य का स्मरण कर रहा था । उसके पति मिस्टर फरहान सिराहने बैठे हुए थे । खुन ने खुन को पहचान लिया । आ गये तुम अनवर और इतना कहते ही वो फफक–फफक कर रो पड़े । किसी अजनबी को भी उदास देखकर दयार्द्र होना मनुष्य का सहज गुण होता है वो तो उसके पिता थे । हर्षित गले लगाते हुए चुप हो जाइये । मुझे माफ कर दे बेटा । मै तेरा और तेरी माँ का गुनहगार हु । मेरा मन मेरे बस मे होता तो ये सब नही होता । मैने दूसरी शादी करके मै यहां शिफ्ट हों गया । मेरे ही कर्म मुझ तक लौट कर आये । मेरे तीनो बेटे नालायक निकले । बेटी ने सहारा दिया । आखिरी रुखसत से पहले मै तुमसे अपने गुनाहो की माफी मांगकर तौबा करना चाहता था । दोनो के गीले शिकवे दूर हुए । अचानक हर्षित को महसूस हुआ जैसे सांसे बंद हो गई हो। कुछ देर पहले तक जिस पुतले मे एक शरीर बसता था अब वह एक पंजर

है। लोगो ने कहा की रखसती से पहले सब मुरादें पुरी हो गई थी । जन्नत अता होगी , आमीन ।

उम्र की दस्तक (संस्मरणात्मक कहानी)

किसी काम से मेरा एक दिन उदयपुर जाना हुआ । देहली गेट पर उतरना था। उतरकर चारो तरफ नजरें दौड़ाई तों मेरी निगाहे एक वृद्धा दादी पर पड़ी जिनकी उम्र का अंदायजा उनके चेहरे पर पड़ी झुर्रियों से लगाया जा सकता था । दादी जी एक बड़े मूढ़े का सहारा लेकर उनींदी आँखो से कभी आँखो को खोलती तों कभी मिचकाती । आखिरकार माजरा क्या है ? इतनी उम्र में जब इन्हे आराम सैया पर होना चाहिए तब ये इस दुकान पर बैठी है । वो दुकान एक फर्नीचर की छोटी और पुरानी सी दुकान थी । यह जानने के लिए मै कुछ खरीदने की इच्छा न होते हुए भी उनके पास गई । प्रणाम दादी माँ । मेरे प्रणाम करते ही उन्होंने बड़ी देर तक मुझे देखा । जैसे अपनी उम्र की आँखो से मेरा एक्सरे कर रही हो । काफी देर तक गौर से देखने के बाद उन्होंने बोलने की कोशिश की । उनके पेपले मुँह में एक भी दाँत शेष नहीं रहा था । जीभ लड़खड़ा रही थी । आँखे बार बार चौंधिया रही थी । दादीजी मैने अपनी बात को फिर से दोहराया । मै उनसे कुछ पूछना चाह रही थी किन्तु बुढ़ापा ज्यादा होने की वजह से वह सुन नहीं पा रही थी । बुढ़ापा अकेले कहा आता है , अपने साथ उम्र का वसंत छीन ले जाता है । जीभ में खादय वस्तुओ के परीक्षण करने की क्षमता होती है किन्तु उन्हे चभा कर स्वाद का अहसास करवा सके उन दांतो का बुढ़ापा आते ही गिरना शुरु हो जाता है। बलिष्ठ से बलिष्ठ शरीर भी झुककर दुसरो पर आश्रित हो जाता है ।जो लोग अपनी भरी जवानी के मद में कभी किसी के सामने नहीं झुके वो भी मोहताज हो जाते है ।आँखे देखना चाहती है किन्तु दृष्टि साथ छोड़ जाती है। किसी का तों मन और वासनाये अंतिम समय तक तृप्त नहीं होते केवल शरीर असहाय हो जाने से मन मसोसकर रह जाना पड़ता है । हजारों को सहारा देने वाला भी एक छोटी सी लठिया के सहारे से चलता है । शरीर जो कभी सौंदर्य का दमदमाता प्रतिबिम्ब हुआ करता था उसकी जगह चेहरे पर गहरी झुर्रिया पड़ जाती है । मांसल भुजाये जीर्ण शीर्ण कपड़े की तरह ढीली होकर लटक जाती है । पलभर में रूटिंग करने वाली गर्दन मुड़ भी नहीं पाती । नींद आँखो से ओझल रहती है । व्यक्ति भाग्यवादी हो जाता है । वह उसे दैवीय विधान मानकर भोगता है । इस प्रकार समय आने पर बुढ़ापे के सैकड़ो लक्षण प्रकट होते है ।

बुढ़ापा अभिशाप नहीं है। बीमारियों की बात अलग है। वृद्धों के पास जीवन्त अनुभवों का कोष होता है। वे आदरणीय हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले निष्कर्ष भौतिक रूप में सही होते हैं लेकिन माता पिता व वरिष्ठों से आत्मीयता की व्याख्या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ही संभव नहीं है। वरिष्ठों से हमारे रिश्ते अव्याख्येय हैं। ऋग्वेद के रचनाकाल से लेकर रामायण महाभारत होते हुए

आधुनिक काल तक इन रिश्तों की प्रीति ऊष्मा एक जैसी है। इनका समाज विज्ञान अनूठा है। लेकिन आधुनिक समाज में वरिष्ठों के प्रति श्रद्धा का अभाव है। वैदिक संस्कृति में माता पिता देवता हैं। दुनिया की किसी भी संस्कृति व सभ्यता में माता अदृश्य ईश्वर या मान्य देवों से पिता बड़ा नहीं है लेकिन भारत में माता पिता सुस्थापित देवों से भी बड़े हैं।

कवि भर्तृहरि ने भी कहा है गात्रं सङ्कुचितं, गतिः विगलिता, दन्तावलिः च भ्रष्टा, दृष्टिः नश्यति, बधिरता वर्धते, वक्त्रं च लालायते, बान्धवजनः च वाक्यं न आद्रियते, भार्या न शुश्रूषते, पुत्रः अपि अमित्रायते, हा जीर्णवयसः पुरुषस्य कष्टं।

(वृद्धावस्था में आदमी की ऐसी दुर्गति होती है कि) शरीर सिकुड़ने लगता है (उसमें झुर्रिया पड़ जाती हैं), चाल–ढाल में विकार आ जाता है (व्यक्ति लड़खड़ाते हुए चलता है), दंतपंक्ति गिर जाती है (दांत सड़–गल जाते हैं), आंखों की ज्योति क्षीण हो जाती है, श्रवण–शक्ति का ह्रास हो जाता है, मुंह से लार चूने लगती है (मुख पर भी नियंत्रण नहीं रह जाता है), सगा–संबंधी या नाते रिश्तेदार भी कहे गये वचन का सम्मान नहीं करता है ।

मै उन दादीजी को देखकर सोच ही रही थी क्या बुढ़ापा वास्तव में इतना दारुण्य और कष्टदायक है और बदलती ऋतुओ की तरह उसका भी आना शाश्वत है किन्तु फिर भी लोग ना जाने किस मद से इतराते है ।

सोचते सोचते कब ध्यानमग्न हो गई पता ही नहीं चला । ट्रिन ट्रिन दादी माँ अपने हाथों से किसी घंटी को बजा रही थी जो शायद संकेत था की दुकान पर कोई ग्राहक है । तभी अंदर से एक आदमी आया देखने में वो काफी मस्टंडा लग रहा था जो शायद उस वृद्धा दादी का बेटा था । बुढ़ापे में जहाँ हमे वृद्धों को आराम व सम्मान देना चाहिए वही किसी–किसी जगह उन्हे तिरस्कार भी मिलता है। हमे उनका आदर करना चाहिए। श्रोतव्यम खलु वृद्धानामिति शास्त्रनिदर्शनम ।

वृद्धों की बात सुननी चाहिए ऐसा शास्त्र कहते है । किन्तु दुर्भाग्यवश कुछ मूर्ख लोग उन्हे इसलिए लतियाते है क्योकि वो निस्तेज हो चुके है जबकि वो भूल जाते है उम्र की इस दहलीज पर तों आखिरकार एक दिन उन्हे भी आना है । क्या चाहिए उसने सवाल किया । जी आई तों मै कुछ और लेने थी लेकिन लेखिका हु इसलिए यहां से कहानी का एक पात्र ले जा रही हु ।

फर्स्ट एट्रेक्शन

प्राची ने जैसे ही इंस्टाग्राम ओपन किया उसके पास एक अनजान शख्स की फ्रेंड रिक्वेस्ट आई । प्राची एक सुसंस्कारित लड़की थी किसी अनजान शख्स को अपनी फ्रेंड रिक्वेस्ट में जगह देना उचित नहीं समझा । प्राची का अधिकतर समय पढ़ने में जाता था । पढ़ाई करते समय जब वह यदा कदा उबाऊ महसूस करती थी तों बैडमिंटन खेल लिया करती थी । उसने अपने आप को बहुत मजबूत बना रखा था । उसका मन अभी तक इतना स्थिर था की शायद वह किसी भी घटना से नही हिल सकता था । तमाम खूबिया होने के बावजूद प्राची को खुद में एक कमी थी उसका रंग गहरा साँवला था । प्राची जिस अभिजात्य वर्ग से आती थी उसमे शादी विवाह में गौर वर्ण को प्राथमिकता दी जाती थी ।

प्राची को भी घरवालों ने शुरु से यही कह रखा था की अगर ठीक ठाक पढ़ लेगी या सरकारी नौकरी लग जाएगी तों तुझे अच्छा घर बार मिल जायेगा नहीं तों 2 जून की रोटी मिले ऐसा घर बार मिल जाये उसका भी ठिकाना नहीं ।

प्राची ने भी एक जिद्द बना रखी थी जैसे सरकारी नौकरी ही उसके जीवन का उद्देश्य हो । ऐसी चीजे जो उसके मन को भटकाये वह अपने जीवन मे नहीं लाना चाहती थी । प्राची ने क्लर्क के लिए कुछ दिनों पहले जो एग्जाम दिया था आज उसका रिजल्ट आ गया और प्राची को भीलवाड़ा में घर से तकरीबन 300 किलोमीटर दूर जोइनिंग मिल गई । जॉब लगी उस समय प्राची की उम्र तकरीबन 22 साल रही होगी । लड़की उम्र से भी परिपक्व हो गई है और अपने पैरो पर भी खड़ी हो गई है इसलिए उसके पिता राजेंद्र प्रसाद ने प्राची के लिए रिश्ता देखना शुरु कर दिया ।

प्राची के जॉब में होने के बाद भी कही ना कही उसके विवाह में अड़चने आ ही रही थी । कभी उसका रंग सुंदर ना होने की वजह से लड़का मना कर देता तों कभी लड़के का परिवार मना कर देता । इसी तरह दों साल बीत गये । लोगो ने भी ताने मारने शुरु कर दिये थें की जवान लड़की को कब तक घर में बिठाकर रखोगे । कोई बेरोजगार लड़का ही देख लो । अब प्राची के पापा के सामने दों समस्या थी पहली तों लड़का मिल ही नहीं रहा था दूसरी समस्या ये थी की अगर वो बेरोजगार लड़का देखता है तों लोग वैसे ताने मारेंगे की प्राची में क्या कमी थी जो मेल भी नही मिलाया बिना मेल के ही शादी कर दी ।

बड़ी मुश्किल से प्राची के पिता ने एक जगह बात चलाई लड़का । लड़का कलेक्टर साहब के दफ्तर में बाबू था । कलेक्टर साहब के दफ्तर में बाबू होना भी किसी अधिकारी के स्तर से कम नहीं होता । साथ में लड़का खानदानी था । आसपास के गाँवों में अत्रि परिवार के नाम का डंका बजता था । यही सोचकर राजेंद्र प्रसाद ने प्राची का रिश्ता उस घर में करने की ठान ली थी । आज लड़का प्राची को देखने आया था । प्राची का ये पहला एक्सपीरियंस नही था जब उसे कोई लड़का देखने आया हो इससे पहले भी प्राची को काफी लड़के देख कर जा चुके थे । लड़के के सामने आने पर जैसे ही प्राची की नजर लड़के पर पड़ी प्राची विस्मित हो गई । आज तक उसे जितने भी लड़के देखने आये थें वो सब उसमे से आधे भी सुंदर नहीं थें । बातचीत का सिलसिला शुरु हुआ । लड़के ने अपना नाम बताकर शुरुआत की । प्राची को उम्मीद थी की सुरेन भी अन्य लड़को की तरह उसे रिजेक्ट कर देगा । क्योकि सुरेन को उससे भी बैटर लड़की मिल सकती है । लेकिन शाम को आये एक कॉल ने प्राची को अहसास दिलवा दिया की अब उसके भी भाग्य बदलने वाले है । सुरेन ने घरवालों के प्रतिरोध के बावजूद प्राची से रिश्ते की हामी भर दी थी । लेकिन सुरेन के घर के माली हालात ठीक ना होने की वजह से उन्हीने रिश्ता करने में 2 साल का वक्त मांगा । राजेंद्र प्रसाद ने उन्हे सहर्ष वक्त दे दिया ।

इसी दौरान प्राची के पास एक अजनबी शख्स की बार–बार इंस्टाग्राम पर फ्रेंड रिक्वेस्ट आने का सिलसिला शुरु होता है । शुरु में प्राची ने कई बार इग्नोर किया और रिक्वेस्ट को डिलीट कर दिया लेकिन बार–बार आने से उसने सोचा चलो एक्सेप्ट कर लेते है । उस शख्स ने प्राची की प्रोफाइल में सभी फोटो पर जबरदस्त कमेंट किये, प्राची को लगा शायद कोई टेलेंटेड बंदा है। धीरे–धीरे दोनो में बाते होने लगी । ये प्राची का फर्स्ट एट्रेक्शन था। एट्रेक्शन प्यार में बदला । प्राची जिस लड़के से बात किया करती थी उसका नाम बंटी था । बंटी प्राची के सीधेपन का फायदा उठाकर उससे रुपये एंठ रहा था । प्राची को वह अपने माँ–बाप की वृद्धावस्था व चार बहनो का हवाला देकर खुद की मजबूरी दिखाता था की वह पढना चाहता है किन्तु परिस्थतिया आड़े आ रही है । प्राची अपनी सैलरी में से हर माह उसको खर्चा भेज दिया करती थी । उसके कपड़े, फीस, यहां तक उसके रिचार्ज के पैसे भी प्राची ही भेजती थी। अफैयर के एक साल बाद प्राची को किसी तरह पता चला की बंटी शराब भी पीता है, नशा भी करता है । प्राची ने हर कोशिश की किसी तरह बंटी को सही रास्ते पर लाने की । लेकिन बंटी ना तों सही रास्ते पर आना चाहता था ना खुद को बदलना । हालांकि वह प्राची के सामने दिखावा करता था की उसने खुद को बदल लिया और प्राची उसकी बातो पर भरोसा भी कर लेती थी ।

कुछ दिनों बाद प्राची की सगाई सुरेन से तय हो गई । प्राची ने तमाम कोशिशे की की किसी तरह सगाई टूट जाये तों बंटी से उसकी शादी आसानी से हो जाएगी । बंटी के प्रति चलते आकर्षण के सुरेन प्राची को फूटी आँखो नहीं सुहाता था । बंटी को भी इस बात की भनक थी की अगर दोनो का रिश्ता सही रहेगा तों तेरा रास्ता बंद हो जायेगा । रास्ता बंद होने का एक मतलब यह भी था की प्राची की तरफ से उसको मिलने वाले सभी रुपये मिलने बंद हो जाएंगे । इसलिए मौका मिलने पर वह प्राची को भड़काने की कोशिशे करता रहता । प्राची के दिलो दिमाग पर उसने इस कदर असर कर दिया था की बंटी के सिवाय उसे कुछ सही या गलत नहीं दिखता । वह उसके झूठे प्रेम के मकड़जाल में उसी तरह फंस चुकी थी जिस तरह जादूगरी का खेल दिखाने वाला सम्मोहित करके सबको बाँध लेता है फिर वह जो दिखाना चाहता है वही दिखता है ।

प्राची ने अनमने मन से शादी की । उस पर बंटी का नशा अब भी नहीं उतरा था उसने कुछ दिनों बाद बंटी को मिलने का वायदा कर रखा था । शादी के चौथे दिन सुरेन ने प्राची को जल्दी से तैयार होने के लिए कहा उन्हे किसी से मिलने जाना है । प्राची हैरान थी, अचानक बने इस प्रोग्राम से वह सोच रही थी इस तरह अचानक किससे मिलने !

दोनो तैयार होकर गाडी में बैठकर निकल चुके थे । सुरेन ने महिला सुधार गृह के नजदीक जाकर गाडी रोक दी । दोनो अंदर जाते है । आओ प्राची तुम्हे किसी से मिलाना है । सामने एक लड़की खड़ी थी जो कुछ सामान्य हालत में नहीं दिख रही थी । ये मनीषा है जानती हो, खैर तुम कैसे जानोगी? अपनी जेब से मोबाइल निकालकर एक तस्वीर दिखाता है । प्राची उस तस्वीर को देखते ही सर पकड़ कर बैठ जाती है । उस तस्वीर में मनीषा और बंटी इतने क्लोज खड़े थे की उसको देखकर कोई भी अनुमान लगा सकता था की उनका रिश्ता सहज नहीं था ।

प्राची बंटी ने सिर्फ तुम्हारी ही फीलिंग्स के साथ खिलवाड़ नहीं किया । मनीषा दीदी भी डॉक्टर थी और तुमसे ज्यादा उसे सपोर्ट करती थी लेकिन बदले में क्या मिला । बेवफाई , धोखा , भावनाओं से खिलवाड़ । प्राची को लग रहा था अब सुरेन को पता लग जाने से उसका डाइवोर्स पक्का है । और अब कौन मुझे एक्सेप्ट करेगा । समाज , घर वाले या रिश्तेदार । हर कोई ताना देगा । ऐसे जीवन से तों मरण ही बेहतर है । चेहरे के मनोभावो को समझकर सुरेन ने कहा घबराओ मत प्राची तुम्हारा ये राज तुम्हारे और मेरे अलावा मेरी परछाई भी नहीं जानेगी । और ना मै कभी तुम्हे छोड़ कर जाऊंगा । तुम्हारी जगह मेरे दिल में अब भी उतनी ही है जितनी पहले थी ।

मुझे ये सब पहले से पता था । किन्तु मै तुम्हे अहसास दिलवाना चाहता था जो मैने दिलवा दिया ।

प्राची की आँखे डबड़बा रही थी । आँसू रुकने का नाम नही ले रहे थे । मैने इतना सब किया फिर भी । वो तुम्हारी नादानी थी प्राची तुम फर्स्ट एट्रेक्शन को ही प्यार समझ बैठी । प्यार तों वो सब है जो मुझे तुम्हारी आँखो में दिख रहा है ..... ।

कन्फर्म टिकट

आज मधु मधु हर दिन की तरह नियत समय पर स्कूल जाने लगी । स्कूटी स्टार्ट नहीं होने के कारण जल्दबाजी में बस पकड़ी । स्टैंड पर भीड़भाड़ थोड़ी ज्यादा ही थी , लेकिन थोड़े ही परिश्रम से उसे सीट मिल ही गई । सवारियों का आना उसके बाद भी जारी रहा । मधु मैडम के बगल वाली सीट पर एक वृद्ध महिला जिसकी उम्र तकरीबन 70 से ऊपर रही होगी अपनी लकड़ी टेकते हुए मधु मैडम के बगल वाली सीट पर बैठ गई । बस चलने ही वाली थी कि इतनी देर में एक लड़का जिसकी दाढ़ी मूछ ठीक से आना शुरू हुई हुई थी जोर–जोर से उस वृद्ध महिला पर चिल्लाने लगा तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरी सीट पर बैठने की । टिकट कन्फर्म करके बैठना चाहिए था , सीट मेरी है आप प्लीज यहां से उठ जाइये । उस लड़के की तेज आवाज बस की अन्य सवारियों की आवाज को दबाने के लिए काफी थी । सब सवारियों का ध्यान अब उस वृद्ध महिला और उस लड़के की तरफ ही था । वृद्ध महिला जिसे ठीक से बोला भी नहीं जा रहा था बार–बार यही कह रही थी बेटा मैं तो ठहरी अनपढ़ तू बार–बार क्या कंरफम कंरफम बोल रहा है मैं तो कुछ समझ नहीं रही हूं । अभी उस वृद्ध महिला की बात खत्म ही नहीं हुई थी इससे पहले ही उस लड़के ने बात काटते हुए कहा कंरफम नहीं बुढ़िया मैं कंफर्म बोल रहा हूं । इसका मतलब होता है सीट पक्की । जब तुझे खुद को अक्ल नहीं थी तो कम से कम मुझ जैसे किसी समझदार को पूछ कर ही बैठ जाती ।

बेटा इसमें पूछना क्या ? मुझे सीट खाली नहीं मिली , यह सीट खाली थी तों मै यहां बैठ गई । लड़का बोला बुढ़िया मैं नीचे कुछ खरीदने गया इसका मतलब यह तो नहीं है कि कोई भी मेरी सीट को खाली देख कर बैठ जायेगा । लड़के ने बोलना जारी रखा ।

लड़के के साथ–साथ उसकी लड़ाई की आवाज भी तेज होती जा रही थी । पास में बैठी हुई मधु मैडम का गुस्सा और त्यौरी दोनो चढ़ने लगे थें । आखिरकार वृद्धों का सम्मान भी तो कुछ होता है ।

सुनिए भाई साहब क्या नाम है आपका ?

यह तो कोई तरीका नहीं हुआ आपका किसी वृद्ध महिला से बात करने का । ,जब इन्हे नहीं पता था तो बैठ गई । उसमें कौन सा गुनाह कर दिया ।

तुम्हारी मम्मी , बहन , भुवा बेटी भी बस में सफर कर सकती है । ईश्वर ना करे उनके पास भी टिकट नहीं हों , तो तुम क्या करोगे ?

लड़का जिसका गुस्सा ठंडा नहीं हुआ था । तपाक से जवाब देते हुए बोला राजवीर के घर वाले बिना टिकट कंफर्म बस में नहीं बैठते । और टिकट कन्फर्म हों तो कंफर्म सीट से उठाएगा कौन ?

फिर भी भाई साहब मान लो अगर सवारी इतनी हो की वेटिंग में भी नंबर नहीं आए तो क्या करोगे ? भाई साहब आप समझदार हो पढ़े–लिखे हो आप ही ऐसा करोगे तो एक समझदार और एक जाहिल अनपढ़ में अंतर क्या रहेगा । अगर तुम अपनी सीट इन दादी जी को भी दे देते तो अगले स्टेशन मै उतरकर मेरी सीट आपको दे देती । जिंदगी तो ऐसे ही चलती है । आओ माजी मेरी सीट पर बैठ जाओ । उसे वृद्ध महिला को अपनी सीट पर बैठा कर मधु मैडम खड़ी हो गई । कुछ देर बाद मधु मैडम का स्टैंड आ गया ।

उसें तकलीफ इस बात की नहीं थी कि उसे कंफर्म सीट होने पर भी खड़ा होकर आना पड़ा बल्कि खुशी इस बात की थी अगर इतनी सवारी में से किसी एक ने भी उसकी बात को धार (धारण कर) लिया तो फिर किसी वृद्धा को बिना कंफर्म टिकट लेकर खड़ा होकर नहीं आना पड़ेगा ।

ससुराल का आँगन

आज जानवी का भाई अंकित उसके ससुराल से उसे पीहर लेने आया हुआ था । 4 महीने हो गए शादी को और इन चार महीना में जानवी केवल एक बार अपने मायके गई थी । वह भी शादी के तुरंत बाद होने वाली फिरमोडे की रस्म में । जानवी के पिता दीनानाथ ने उसके ससुराल वालों को सैकड़ो कॉल किए होंगे कि हमारा मन बेचौन सा है बेटी के बिना आंगन भी सुना सा है बेटी की शादी कभी कितने दिन हुए है । एक बार दो–चार दिन रह जाती तो हमारा भी मन लग जाता ।

और दो–चार दिन घर रहकर उसको भी ससुराल में बैचेनी नहीं होती ।

22 साल से आपके ही घर में पलकर बड़ी हुई है आपकी बेटी । आपकी बेटी 22 साल से आपके ही साथ रहकर आपके आंगन को ही महका रही है थोड़ी खुशबू तो हमारे आंगन में भी आने दीजिए । या फिर दीनानाथ जी बेटी के बिना इतना ही सूनापन है तो उसका विवाह ही नहीं करते । सब बातो को सुनकर दीनानाथ जी रुंधे गले से कहते हैं आपकी सब बातें सही है समधन जी लेकिन अर्थो ही कन्या परकीय एव यानी कन्या तो पराया धन होती है । विवाह तो करना ही था आज नहीं तो कल । आज जानवी पर आपका हक हमसे ज्यादा है । पिता के घर से बेटियों की डोली उठती है और ससुराल से उनकी अर्थी उठती है । लेकिन इतना निवेदन तो कर ही सकते हैं कि एक पिता बेचौन है बेटी के वियोग में । वियोग तों है ही , लेकिन क्या आप उस वियोग के ज्यादा बढ़ने के दोषी बनना चाहोगे ।

ठीक है दीनानाथ जी एक–दो दिन में आकर ले जाना , साथ संतोषी ने फाइनली प्रतिक्रिया देते हुए अनमने मन से कहा । दीनानाथ जी ने खुशखबरी अपनी बेटी जानवी को बताने के लिए कॉल किया कि उसके ससुराल वाले उसे एक या दों दिन में मायके भेज रहे हैं । जानवी ने सुना और सुनते आज उसकी खुशी सातवें आसमान पर थी । एक दिन बिता , 2 दिन बीते इसी तरह से आज 7 दिन बीत गए ना तो मायके से कोई फोन आया ना ही ससुराल में किसी ने जानवी से कहा कि तुमको मायके जाना है । शाम को जानवी के पति राजीव ऑफिस से लौटे तों जानवी कुछ गुमसुम सी और उखड़ी हुई सी थी । दोनों साथ खाना खाने लगे तों जानवी ने बड़ी मुश्किल से एक 2 निवाले खाये । तों राजीव ने पूछ लिया क्या बात है आज किसी चिंता में हों । कुछ बात नहीं है जानवी ने अपना दर्द छिपाते हुए कहा । देखो मैं तुम्हारा पति हूं , सुख में ही नहीं दुःख में भी एक दूसरे

का साथ देने का वादा किया था । तुम्हारा कोई गम अब तुम्हारा नहीं है , हमारा गम है ।

इतना सुनते ही रुलाई फूट पड़ी ।

जानवी ने मां के सभी भाव एक ही सांस पर कह दिए । तुम चिंता मत करो जानवी मैं तुम्हारा दुःख जानता हूं । जिस आंगन में 22 साल पली बढ़ी हो उसको एक अजनबी के लिए कुछ पलों में छोड़ना कितना मुश्किल होता है।

मैं भी एक बहन का भाई हूं जब मेरी बहन ससुराल में इतने दिन से है तो बेचौनी में हमारा जो हाल होता है वही हाल आपके भाई और पापा का भी होता होगा ।

मैं कैसे भी करके तुम्हें कल तुम्हारे गांव भिजवा दूंगा । दूसरे दिन जानवी का भाई अंकित उसे लेने आता है । अंकित को बैठक में बिठाकर राजीव जलपान की व्यवस्था करता है । घंटा हुआ 2 घंटे बीते लेकिन जानवी को अभी भी फुर्सत नहीं कि वह जाकर भाई का हाल–चाल पूछ सके ।

मायके जाते समय भी उसें इस बात की फिक्र है ही कल पतिदेव के ऑफिस जाने के लिए कौन सी शर्ट को प्रेस करना है..... सास के कपड़े धोने हैं..... इत्यादि इत्यादि ।

फाइनली चार महीना के इंतजार के बाद जानवी आज अपने घर जा रही है । अभी कार में बैठकर जानवी घर से निकली भी नहीं थी कि सास ने सर पर हाथ रखते हुए कहा बेटा कल ही आ जाना ।

तुम बिन घर का आंगन सुना है ,

दूसरे दिन राजीव जब ऑफिस जाने के लिए निकलने लगे तों संतोषी देवी ने कहा कि बेटे ऑफिस से आज जल्दी आ जाना शाम को बहू को उसके मायके से लाना है ।

देख तो एक दिन बहु मेरी घर पर नहीं थी तों किसी ने चाय समय पर नहीं दी । आज तो सुबह से किसी ने चाय के लिए भी नहीं पूछा..... देख तो घर का सामान भी कैसा अस्त व्यस्त है ..... सुबह से झाड़ू भी नहीं लगी ।

अब तो तू एक काम कर बेटा जानवी को उसके मायके से ले आ । अब राजीव का सब्र जवाब दे रहा था । मैं जानवी तुम्हारा बहुत ख्याल रखती है , अच्छी है , घर के प्रत्येक सदस्य की जरूरत का ख्याल रखती है । कभी कोई शिकायत नहीं करती लेकिन इसका मतलब यह थोड़ी होता है कि वह कुछ कहे नहीं तो हम उसे सुनाएं और उसे सुनाएं । माना आप उसें बहू की तरह नहीं रखकर बेटी की तरह रखते हो , लेकिन खुद के आंगन की भी याद आती होगी । उसके जीवन के 22 साल उसके घर के आँगन में गुजरे है । जब आपको 4 महीना में जानवी से इतना लगाव हों गया तो उसके मां–बाप की भी सोचो जिन्होंने उसें 22 साल से पाल पोसकर बड़ा किया है । दो–चार दिन उसके मायके में रहने दों जैसे दीदी के बिना घर का आँगन सुना है ऐसे ही वह भी किसी की बहन है उसके बिना भी उसके घर का आँगन सुना होगा । ससुराल का आंगन सबका समान होता है मां फिर वह चाहे मेरी बहन हो या किसी और की । ठीक है बेटा पर अगले सप्ताह तो जरूर ले आना 1 मिनट के खामोशी के बाद एक हँसी छूट पड़ती है । राजीव बाबू खिलखिलाकर हँस पड़ते है । हाँ माँ! अगले सप्ताह जरूर।

नूतन वर्ष आया है

कोयल कूके डाली–डाली ,
भंवरों ने पुष्पों पर गूंजाया है ,
चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा ,
देखो भाई !नूतन वर्ष आया है ।

टहनियो ने किया है नए पत्तों से श्रृंगार ,
चारों तरफ चल रही सुरभि मंद बहार ,
प्रेम से पुलकित है तन का रोम–रोम ,
समाप्त हो चुका मन का विराग ।

नूतन वर्ष ,परिवर्तन नव ,
प्रकृति ने भी किया श्रृंगार ,
देखकर लगता है वसुधा को ,
मानो पहना हो पुष्पों का हार ।

कही होती फसल की कटाई ,
कही बसंत अपना रूप दिखाती है ,
पतझड़ के बाद आए नए फूल और पत्ते
उम्मीदों की नई ज्योति जगाती है ।

राव तुलाराम

आर्यावर्त परतंत्र हुआ ,
दासत्व बेड़िया जकड़ डाली ।
फूट डालो और राज करो
अंग्रेजो ने नीति बना डाली ।

सकल सामंत, भूप , नृपति,
अंग्रेजो के सामने हाथ बांधे खड़े थें ।
कुछ मातृभूमि के दीवाने ,
देश की आन पर खड़े थें ।

अहीरवाल का लंदन रेवाड़ी कहलाता था ,
यदुकुल का गरुड़ ध्वज मुक्त गगन में फहराता था ।
राज्य हड़प की नीति अंग्रेजो ने अपनाई थी ,
रेवाड़ी रियासत के कुछ गाँवों की जागीरे कब्जाई थी ।

अपनी गलत नीतियों से अंग्रेजो ने,
प्रजा को विद्रोही बना लिया था ।
तुलाराम की मातृभूमि पर कब्जा करके ,
सोये सिंह को जगा दिया था ।

शौर्य, तेज, देशभक्ति सब उसकी जाति थे ,
खड़ग, बरछी, तलवार सब उसकी विपदा के साथी थे ।
तलवारों की झंकारों में वह पला–बढ़ा था ,
मातृभूमि की रक्षा को लेकर मानो उसको विधाता ने गढ़ा था ।

अजानबाहु राव तुलाराम जब चलता था ,
ऐसा लगता था मानो स्वयं काल मचलता था ।
उसके अतुलित प्रचण्ड का महाकाल साक्षी था ,
मातृभूमि की रक्षा में वह स्वयं विरुपाक्षी था ।

यदुकुल का अंश इस समर बेला में आया था ,
हजारों अंग्रेजो का रक्त अपनी शमशीर से बहाया था ।
जिधर जाता उधर रुंड–मुंड पड़ जाते थें ,
हाहाकार मच जाता जब तुलाराम स्वयं युद्ध में आते थें ।

नसीबपुर की भूमि पर ,
काल नाच रहा प्रचण्डी पर ।
जिधर जाता तुलाराम उधर कोहराम मच जाता था ,
शौर्य देखकर लगता मानो काल स्वयं युद्ध मे आता था ।

युद्ध भूमि गुंज रही ललकारों से ,
दादा किशन के जंगी नारो से ।
पंद्रह हजार अंग्रेजो के सामने पांच हजार अहीर थें ,
मातृभूमि के दीवाने सभी युद्ध में अतुलित वीर थें ।

एक तरफ था जेरार्ड खड़ा ,
दूसरी तरफ तुलाराम हठीला ।
सन सत्तावन का संग्राम आज इतिहास लिख रहा था ,
तुलाराम के रूप में स्वयं मानो मृत्यु का देवता लड़ रहा था ।

तुला ने अपने घोड़े को अंग्रेजो की तरफ बढ़ा दिया था ,
लॉर्ड जेरार्ड का सर झटके में ही गिरा दिया था ।
तुला के समर में आते ही अंग्रेजो का दिल घबरा जाता था ,
उसके शौर्य की गाथाओ से लंदन भी दहल जाता था ।

सत्तावन की क्रांति के तुलाराम अग्रिम योद्धा कहलाये थे ,
रूस के जार से सहायता लेने भारत के दूत बनकर आये थे ।
आजादी की रक्षा करते करते तुला पंच महाभूतों में विलीन हुआ ,
मातृभूमि का बेटा आज अपनी मिट्टी में लीन हुआ ।

ए चाँद अगले बरस फिर आना

हाथों को मेहंदी से लाल कर जाना ,
मस्तक पर कुमकुम लगा जाना ,
कंगन से शरीर पर बेशक ढक जाना ,
पर ए चाँद अगले बरस फिर आना ।

मस्तक पर रहे सदा पिया का हाथ,
बना रहे सात जन्मों का साथ ,
ऐसा मुझे एक वरदान दे जाना ,
पर ए चाँद अगले बरस फिर आना ।

मेरी खुशियों को किसी की नजर ना लगाना ,
मेरे प्रियतम की सदा तुम उम्र बढ़ाना ,
सदा सुहागन रहूं ऐसा एक वरदान दे जाना,
पर ए चाँद अगले बरस फिर आना ।

भूखी प्यासी रहूंगी दिन भर की बेकरार मत करना ,
ए चाँद तुम आने में ज्यादा रात मत करना ,
भूखी प्यासी तो कोई सजनी फिर भी रह जाएगी ,
पिया मिलन की दूरियां वह कैसे सह पाएगी ।
ए चाँद अगले बरस तुम फिर आना ।

जीवन की हर खुशी श्रृंगार पिया से है ,
आभूषण प्रियतम से है, मेहंदी महावर पिया से है ,
मेरे घर के आंगन का कोना–कोना सदाबहार पिया से है ,
ए चाँद अगले बरस तुम फिर आना ।

ए चाँद तुमसे एक वरदान मांगती हूं ,
तेरी ज्योति में पिया का दीदार चाहती हूं ,
जब तक जिउ सुहागन बनकर जिउ,
तुझसे ताउम्र सौलह श्रृंगार का एक वरदान मांगती हु ।
ए चाँद अगले बरस फिर आना ।

चंद्रयान 3

दुनिया को लोहा एक बार ,
फिर से भारत ने मनवाया है ।
चन्द्रमा की सतह पर चंद्रयान ,
3 का सॉफ्ट लैंड करवाया है ।

चंदा मामा की राखी,
धरती माता ने भिजवाई है ।
आज के दिन की तिथि इसरो ने ,
इतिहास में दर्ज करवाई है ।

लैंडर विक्रम से बाहर ,
रोवर प्रज्ञान आया है ।
अपनी ताकत का लोहा ,
आज भारत ने फिर मनवाया है ।

कुछ दिनों के अंधेरे के बाद ,
आज उजाला हो पाया है ।
सकल विश्व को छोड़कर ,
आज भारत ने चाँद पर तिरंगा फहराया है ।

पिता का त्याग

पहली बार जब मै इस दुनिया में आई थी ,
खुशी से तुम्हारी आँखे डबडबाई थी ।
मेरे पैदा होने की खुशी में पापा ,
तुमने शहर भर को मिठाई खिलाई थी ।

दिनभर काम करने से थक जाते थें तुम,
हाथों में पड़े छालो को तुम सबसे छिपाते थे ।
मुझे अभी भूख नही है ऐसा कहकर
अपने हिस्से की रोटी खिलाते थें ,
सबके सोने के बाद खुद पानी पीकर सो जाते थें ।

मेरी स्कूल की महंगी फीस भरने के लिए ताकि पूरे हो मेरे सपने,
तुम थके बदन उन्ही मैले कुलचे कपड़ो मे ही निकल जाते थें ।
बचपन में मुझ पर पड़ी डांट अब समझ आती है ,
वो डांट भी तुम मेरी भलाई के लिए लगाते थे ।

मैने देखा है पापा तुम्हे रातभर जागते हुए ,
मैने देखा है पापा तुम्हे संतान के सपनो के पीछे भागते हुए ।
थोड़े से काम से थक जाते थें तुम ,
फिर भी देखा है पापा मैने तुम्हे काम के पीछे भागते हुए ।

कन्यादान के बाद जब मेरी विदाई का वक्त आया था ,
अपने आँसू छूपाते हुए तुमने जूठा ही मुस्कुराया था ।
मुझे अपनी आँगन की नन्ही कली कहते थे तुम ,
नन्ही कली को आँगन से विदा करके कितने गम
सीने में दबाये थें तुमने ।
मैने देखा है पापा तुम्हे मेरे सपनो को
पुरा करने के लिए उनके पीछे भागते हुए ।

चाय और तुम

गर्म गर्म चाय की चुस्किया और साथ है तुम्हारा ,
जाने कितने दिनों बाद हाथो में हाथ है तुम्हारा ।

क्या बात है तुम्हारे हाथों की बनी चाय में ,
चाय की चुस्कियों में ही जिंदगी का सफर कट जाये हमारा ।

चाय सी कड़क होनी चाहिए मोहब्बत हमारी ,
हर चुस्कियों में रिश्ता गहरा हो हमारा ।

चाय की तलब और तेरी यादो का सफर ,
विरह में बेरुखी से जलता है कलेजा हमारा ।

इजहार ए इश्क भी तुमसे लाजमी था ,
मुझे याद है चाय से ही सफर शुरु हुआ था हमारा ।

बचपन के दिन सुहाने

बचपन के वो दिन भी कितने सुहाने थे ,
थोड़ी हक़ीक़त, थोड़ा जुमला ,ओर कुछ अफसाने थे ।
इसे नादानियाँ समझो या कहो समझदारी का दौर ,
इस जवानी से अच्छे तो बचपन के वो गुज़रे ज़माने थे ।

बरसात के मौसम में कागज की कश्ती बनाते थे ,
कटती पतंग को लूटने गाँव के आखिरी छोर तक जाते थे ।
जात–पात , ऊंच–नीच के सब बंधनों को भूलकर ,
सबसे स्नेह–प्रेम और भाईचारा निभाते थे ।

गमो से कोशो दूर प्रेम की धुन गाते थे ,
दौड़ते–दौड़ते गाँव के कई चककर लगाते थें ,
कभी फिसल जाते थें पांव कीचड में ही
तो कभी रेत पर भी सरपट दौड़ लगाते थें ।

कभी चंदा मामा के लिए रात भर जागते थें,
तो कभी तितली को पकड़ने के लिए भागते थें ।
कभी दादी–नानी परियो की कहानी सुनाती थी ,
तो कभी माँ लोरी गा कर के सुलाती थी ।

खत्म हुआ बचपन, आई जवानी ,
वो दिन भी कितने सुहाने थें ।
इस जवानी से अच्छा बचपन के वो
नादानियों भरे गुजरे अफसाने थें ।

नानी

होश आया जब पहली बार ,
तब खुद को तेरे आँचल में पाया था ।
संसार का समस्त प्रेम मुझ पर ,
नानी तुमने ही लुटाया था ।

कभी ना डांटा तुमने मुझे ,
कहते फूल सी सुकुमारी थी ।
नाना की मै आँख का तारा,
मामाओ की राज दुलारी थी ।

गर्मी की छुटियो में कभी–कभी ,
मेरे मम्मी पापा मुझे घर ले आते थें ।
मेरी याद में नानी तुम ,
नाना संग नीर बहाते थें ।

कभी जब मै पड़ती थी बीमार ,
तुम रात भर नहीं सो पाते थें ।
मेरी चिंता में नानी तुम ,
कितने दुबले हो जाते थें ।

शादी के बाद अब नानी के घर ,
एक बार ही जाना हुआ ।
देख कर नानी के उस आँगन को
जिंदा मेरा बचकाना हुआ ।

नानी बोली तू नहीं तों मुझे ,
तेरी एक तस्वीर दे जा ।
उस तस्वीर को मै हर रोज निहारती रहूंगी ,
तेरी यादो को मेरे मन के कोने में
संवारती रहूंगी ।

मुलाकाते मोहब्बत की

मुलाकाते मोहब्बत के लिए हुए जा रही है ,
ना जाने कितनी सौगाते वों प्यार के लिए लिये जा रही है ।
कभी वो गीत गाकर दिल को बहला रही है ,
तों कभी इत्र से वातावरण को महका रही है ।

कभी इजहारे इश्क जता रही है ,
कभी इकरारे इश्क बता रही है ।
ये हसीन राते इश्क के लिए होती ,
इसी कसमकस में जिंदगी बीती जा रही है ।

प्यार की महफिल और दिलकश नजर आती ,
अगर सारी कायनात मोहब्बत के लिए होती ।
उम्र नफरत में बीती जा रही है आदम की ,
ज्योति अगर सारी बात मोहब्बत के लिए होती ।

कभी जो हमारी एक आह से

कभी जो हमारी एक आह से सिहर जाते थें ,
आज वो हमारे गम को भी अनदेखा कर जाते है ।

जी भर के देखा करते थें जो कभी ,
आज उन्हे पल भर भी देखना गवारा नहीं ।

कभी जो नही देख सकते थें चेहरे पर पड़ी सिकन को भी ,
आज वो हमारी दर्द भरी चीख को सुनकर भी निकल जाते है ।

खता बस हमसे इतनी हुई की उन्हे बेहिसाब प्यार दिया ,
उन्हे खर्च होने वाली एक एक मिनट का हिसाब मांग लिया ।

प्यार में परायापन भी जरूरी है ज्योति ,
ज्यादा अपनापन दिखाओ तों पराया कर जाते है ।

सरहद की दूरिया

मुमकिन है अगर तुम मिटा सकते हों नफ़रत को ,
मगर दों मुल्को के बीच की सरहद कभी मिटाई नहीं जाती ।

तुम बांटते रहे शहरभर में अमनो–चमन ,
मगर सरहद पर मोहब्बत की खुशबु कभी फैलाई नहीं जाती ।

की हमने उन्हे आसियाना दिया, ढेर सारी सौगाते दी ,
पर ये जन्मभर की नफरते भुलाई नहीं जाती ।

मोहब्बत की खुशबु नहीं फैलेगी इन फिजाओ में ,
जब तक नफरत की दीवार गिराई नहीं जाती ।

इंसान इंसानियत का कत्ल करती रहेगी ,
जब तक सरहद पर मोहब्बत की लौ जलाई नहीं जाती ।

इश्क का टूटा पत्थर

तुम्हारी दी हुई सौगाते याद आती है ,
दिल में एक तूफान सा जगा जाती है ।

तुम कहते थें मै चाँद हु तुम्हारा ,
अब तुम्हारे इश्क से भी महरूम नजर आती है ।

हम टूट कर डूब गयें तेरे आसियाने में ,
पर तुम्हे अब मेरी सूरत भी कहा नजर आती है ।

जैसे मै इश्क के घरौंदे का टूटा पत्थर हु ,
तुम्हारी याद मुझे ड़गर से खींच लाती है ।

इश्क बड़ी जालिम चीज है ज्योति ,
इसमे दुनिया मुरौवत नजर नहीं आती है ।

दिया और बाती

सुरज को जरा ढल जाने दों ,
अंधेरे को फैल जाने दो ,
आकाश में तारों को टिमटिमाने दो ,
दिया और बाती का मिलन हो जाने दों ।

जलती है बाती ,
दीया सहारा बन जाता है ।
दोनो के सहयोग से ,
तम भाग जाता है ।

कभी लड़ता जुगनू अंधेरे से ,
कभी शमा परवाने से मिलने आती है ,
जलते जलते तम को हरते
बाती भी दिये में विलीन हो जाती है ।

दिया और बाती महज वस्तु नहीं ,
जीवन के दर्शन को समझाते है ।
दिये की तरह मिट्टी से उपजते है हम सब,
और मिट्टी में मिल जाते है ।

मै एक शिक्षिका हुँ

कक्षा में मै विधार्थियों को ,
जब उनका पाठ पढ़ाती हूँ ।
मेहनत के रास्ते से उन्हे ,
तरक्की की सीढ़ियों का पथ दिखाती हुँ ।

शिक्षा के बिना जीवन में अंधकार है ,
बिना शिक्षा सब कुछ बेकार है ।
कोई रह नहीं जाये शिक्षा से विहीन ,
इसलिए घर–घर जाकर शिक्षा की जोत जगाती हुँ ।

मेरे विधार्थी पढ़ लिखकर,
एक दिन भारत को महान बनाएंगे ।
गहरे सागर में जाकर मोती ढूंढ लाएंगे ,
या सृजन का बीज बोकर चाँद पर जाएंगे ।

जीवन के उलझनों से निकलकर,
उन्हे सृजन की राह पर ले जाती हुँ ।
हां मै एक शिक्षिका हुँ !
मै विधार्थियों में नव सृजन के बीज उगाती हुँ ।

दस्तक–ए–वक़्त

लोग अपने वायदे से मुकरते जा रहे है ,
वक्त के साथ कुछ लोग बदलते जा रहे है ।

कभी जो निभाते थें रिश्तो में ईमानदारी ,
आजकल वो हर रिश्ते में बेईमानी निभाते जा रहे है ।

बदलते वक्त में पुराने लम्हें छुटते जा रहे है ,
कुछ अपने ही रंग दिखाते जा रहे है ।

जिंदगी है अपनों की पहचान भी लाजमी है ,
हर कोई अपने चेहरे के पीछे नकाब लगाते नजर आ रहे है ।

बुरे वक्त की दस्तक करवाता है रिश्तो की पहचान ,
कुछ अपनों के भी नकाब हटते जा रहे है ।

पति और पत्नी

पति और पत्नी का रिश्ता ,
जैसे हो दिया और बाती ।
एक दूजे के सुख के साथी ,
एक दूजे के विपद के साथी ।

कभी लड़ते है , कभी झगड़ते है ,
कभी एक दूसरे को मनाते है ।
सात फेरो की डोर को वो,
अंतिम सांस तक निभाते है ।

ना जाने कितने मौसम बीते ,
ना जाने कितने रिश्ते बनाये ।
पीकर गम एक दूजे का ,
दोनो परस्पर खुशिया लुटाये ।

पति संभालता घर को ,
तों पत्नी लक्ष्मी स्वरूपा बन जाती है ।
कुल परम्परा का पालन करके,
मर्यादा में हर रीत निभाती है ।

कभी भूख को , कभी प्यास को ,
वह सबसे छिपाती है ,
मीत बनकर साथ देती है पति का ,
तों संतान को धूप छाँव से बचाती है ।

पति और पत्नी का रिश्ता ,
जैसे हो दिया और बाती ।
एक दूजे के सुख के साथी ,
एक दूजे के विपद के साथी ।

प्रवासी बेटा

आहट तेरे कदमो की सुनने को बेकरार से है ,
तेरे विदेश जाने के बाद तेरे माँ बाप उदास से है ।
तुझे याद करते है , अश्कों से नीर बहाते है ।
तेरी सलामती की फरियाद कर आते है ।

आँगन तुम बिन सुना है ,
घर का आँगन मुरझा गया है ।
अलौकिक ज्योति से चमकता था घर ,
अब सब जगह अंधेरा छा गया है ।

तुम्हारे बूढ़े माँ बाप की जिंदगी ,
अब इंतजार में ही जा रही है ।
बचपन में बैठते थें तुम जिस साईकिल पर ,
उस की आगे लगी छोटी सीट तुम्हे बुला रही है ।

तेरे बचपन की कुछ निशानियां,
अब उनके जीने का सहारा है ।
एक बार तु लौट कर आ जा,
सिवा तेरे कुछ नहीं गंवारा है ।

तुमसे जुदा होकर

तुमसे दूर आ गयें है अब हम खफा होकर ,
तुम्हे अब भी होश नहीं आया हमसे जुदा होकर ।

शायद मै तुम्हारे लिए जरूरी तों नहीं था ,
फासला बढ़ा लिया तुमने मुझसे जुदा होकर ।

कभी याद तों आते होंगे तुझे भी मेरी मोहब्बत के अफसाने ,
मै भी जी रही हु अब तुमसे जुदा होकर ।

कुछ तों बाते अहसासों की भी थी ,
कभी तों याद आये होंगे तुम्हे हम तन्हा होकर ।

बेकरारी सी है , दिल नादान सा है ,
घुटन सी होती है अब तुमसे जुदा होकर ।

ससुराल की पहली होली

आज ससुराल की पहली होली आई है ,
जीवन में कुछ नये बदलाव लाई है ।
आसान कहा होता है कुछ दिनों में बहुत कुछ बदल जाना ,
अपना घर छोड़ कर ससुराल के रीति रिवाज अपनाना ।
आज शादी के बाद पहली होली आई है ।

ससुराल की पहली होली पिया के संग ,
होली का रंग बिखेर रहा जीवन में उमंग ,
चुपके से आये पिया , हाथों में था रंग लाल ,
डाल दिया मुझ पर रंग और हो गई मै लाल ,
इस कदर उसने मेरी पकड़ी कलाई ,
मै चाह कर भी वहा से भाग नहीं पाई ।

देवर ननद सब ताक रहे थें ,
रंग लगाने को झाक रहें थें ,
मै रंगो से बचती फिरती दौड़ी ,
और वो सब मेरे पीछे भाग रहे थें ,
क्या बताऊ सखी आ रही थी मुझे लाज ,
पर मै नहीं सम्हाल पाई खुद को आज ।

छा गया मुझ पर इस कदर फाल्गुन का रंग ,
याद रहेगा मुझे ससुराल का होली का पहला रंग ,
जीवन में आया उल्लास और उमंग ,
फीका ना पड़ने पाए कभी खुशियों का रंग ।
आज ससुराल की पहली होली आई है ।
जीवन में नई खुशिया लाई है ।

चेहरा तुम्हारा

तुम्हे देखने से नजरें हटती कहा है ,
तेरी सूरत के अलावा और सूरत जचती कहा है ।

ललाट पर सिलवटे सी पड़ी है तुम्हारे,
जो तुम्हारे चेहरे को फबती कहा है ।

पूनम का सा नूर आया है अब तुम्हारे चेहरे पर ,
उदासिया भला यहाँ ठहरती कहा है ।

अप्रतिम सौंदर्य की प्रतिमूर्ति हो गयें हो तुम ,
तुम्हारे जैसी सूरत अब बनती कहा है ।

तुम्हारे चेहरे के सिवा कुछ और नजर नहीं आता मुझे ,
तुम्हे पाने के अलावा मेरी हसरत ही क्या है ।

नाम तुम्हारा

रोज लिखती हु हाथो पर नाम तुम्हारा ,
फिर भी मिटता नहीं गम हमारा ।

इन आंसुओ की तपन हर चीज को मिटा देती है ,
बस एक दूर नहीं होता दर्द हमारा ।

कभी थामते थें तुम इन हाथो को ,
अब हाथो पर नजर नहीं आता हाथ तुम्हारा ।

कभी आँखो मे देखा करती थी सपने ,
एक सपनो का संसार हो हमारा ।

बेसुध सोती पीड़ाओ मे आस ड़गर की ना छोड़ूंगी ,
किस्मत से भी चुरा लूंगी मै नाम तुम्हारा ।

भावना

भावनाये घर परिवार को बसाती है ,
भावनाये संसार को जीना सीखाती है ।
भावना है तों मनुज मनुज लगता है ,
भावना विहीन शून्य और अंधकार है ।

आनंदित होता मन का कोना ,
प्रेम का संचार करवाती है ।
साँसों के तार की डोर भी ,
बिन भावनाओं के नहीं चल पाती है ।

कार और व्यवहार मे ,
वाणिज्य और व्यापार में ।
जीवन मे उमंग भर जाती है ,
भावनाये ही मनुष्य को समाज से जोड़ पाती है ।

पूजा, भक्ति आराधना में ,
अपने इष्ट की प्रार्थना में ।
साधक की साधना में ,
वस्तुओ की विपासना में ।
प्रत्येक में उल्लास जगाती है ,
भावनाएं ही मनुज को मनुज बनाती है ।

मैं आर्यावर्त की हिंदी हुँ

मैं आर्यावर्त की हिंदी हुँ ,
हिंदुस्तान का गुणगान हु मै ।
कभी सूर में, कभी रहीम में ,
तुलसी के मानस का गान हुँ मै ।

प्रेमचंद का उपन्यास हु मै ,
छंद, सुरों का विन्यास हुँ मै ।
भाषाओ के भाल की मै बिंदी हुँ ,
भारत की पहचान मै हिंदी हुँ ।

सरिताओ के निर्मल धारा सी ,
मै सदियों से बहती आई ,
कभी निराला, कभी दिनकर की ,
रचनाओ में मैने चमक दिखाई ।

इस विशद विस्तृत जग का ,
अप्रतिम काव्य संसार हुँ ।
लेखकों की लेखनी, और कवियों की कल्पनाओ थी ,
मै कभी खत्म ना होने वाली उड़ान हुँ ।
मै आर्यावर्त की हिंदी हुँ ,
मै भारत की पहचान हुँ ।

पुराना ख़त

खत खोले तुम्हारे पुराने ,
याद आई वो कहानी पुरानी ।
तेरे अहसासों से संजीदा रहा दिल मेरा ,
आँखो से मेरी बहा पानी ।

मै खिलती रही कली की तरह ,
तूम भँवरे की तरह गुनगुनाते रहे ।
मैने हर फूल को सजा दिया तुम्हारे लिए,
तुम उस गुलशन से भी वफा निभाते रहे ।

वो आसमान से छिंटकती चाँदनी,
और उसमे बहती अमृत धारा ।
उनमे सितारों से झिलमिल थे तुम ,
जहां दिल ले गये हमारा ।

हमारे जुदा होने पर आसमान का ,
आखिरी सितारा भी रोया था ।
रात मैने काटी थी जागकर ,
खत पढ़ कर तु भी ना सोया था ।

नग्न हुई मानवता

नग्न हुई मानवता ,
देश शर्मशार हुआ ।
कुछ दरिंदो के कारण ,
ये कैसा त्राण हुआ ।

स्त्रियों को देवी मानने वाले ,
यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते जानने वाले ।
संस्कृति आज शर्मशार हो गई ,
आज बच्चिया दरिंदो के सामने लाचार हो गई ।

रोज चिल्लाने वालों मे भी ,
अब चुप्पी सी छाई है ।
ध्यान शायद घटना पर गया नहीं ,
या हलक में जुबान अटक आई है ।

सत्ता के लालच मे कुछ लोग ,
संस्कृति का वजूद खो रहे है ।
विरोध करना चाहिए था जिनको गलत का ,
वो नफरत के बीज बो रहे है ।

मेरा इंतज़ार

बेताबी भरा अब मेरा इंतज़ार लगता है ,
मुझे शायद उसका भी अधूरा सा ख्वाब लगता है ।

मयस्सर है अधूरी मोहब्बत मेरी हो जाये पुरी ,
वो भी अपने महबूब को खोने से डरता है ।

उसके भी अरमान उड़ा देते होंगे नींद को ,
मुझे पास ना पाकर वो उदास सा लगता है ।

मेरी परछाई उसके पास आती हुई सी मालूम होंगी ,
मुझे बाहो मे ना पाकर वो बेताब सा लगता है ।

कुछ हासिल हुई, कुछ बाकी है मंजिल ,
मेरा इंतजार मुझे अधूरी किताब सा लगता है ।

मेरी ख़्वाहिशे

रंग बिरंगी तितलियाँ उड़ रही ,
मेरे घर के आँगन मे ।
झूम झूम कर आ रही बरखा ,
मदमाते सावन मे ।

रंग बिरंगे फूलो से लदी ,
डालिया भी अब अपने शबाब पर है ।
ठिठक कर चल रही है टहनियो पर ,
मेरी ख़्वाहिसे पुरा होने के इंतजार मे है ।

कभी धरा पर , कभी क्षितिज पर ,
तो कभी अंबर मे दिख जाती है ।
हकीकत मे न सही , सपनो मे ही सही ,
अधूरी ख़्वाहिशे जिंदगी में रंग भर जाती है ।

घाव और लगाव

घाव देने वालों से लगाव नहीं किया जाता ,
चुभने वाले रिश्तो से निबाह नहीं किया जाता ।
तकलीफ ना हो इसलिए सह लेते है हर सितम को ,
दर्द अगर बदतर हो तो चुप रहने का गुनाह नहीं किया जाता ।

तंग रास्ता सा है उसके घर का ,
बस पाना थोड़ा मुश्किल भरा है ।
जब देखती हु उसे किसी और के साथ ,
सीने पर एक घाव सा लगा है ।

आईने मे भी आती है परछाई नजर उसकी ,
उसका अक्स हर जगह नजर आता है ।
कभी तकलीफ होती थी उसे मुझे तकलीफ मे देखकर ,
अब उसे मेरा घाव भी नजर नहीं आता है ।

दिल्ली हुई पानी – पानी

दिल्ली हुई पानी–पानी ,
आसमान से आई बरखा तूफानी ।
टूट गये नए नवेरे रोड ,
बेपर्दा हुई विकास की निशानी ।
दिल्ली हुई पानी – पानी ।

कार , रिक्शा , ऑटो और इंसान ,
सब तिनके सा बह रहा है ।
दिल्ली के बदलते विकास की कहानी ,
सड़को पर रुका पानी कह रहा है ।

यमुना नदी पर भी है खतरे का निशान ,
पानी के निकास का नहीं है कोई सामान ।
जगह–जगह बच्चों के लिए भी स्विमिंग पुल बन गये है ,
यात्राएं ठप हुई, सबके काम अटक गये है ।
दिल्ली हुई पानी–पानी ।

खाली बरामदा

कभी गुंजा करती थी जहा ,
बच्चों की किलकारी ।
कभी खेला करते थे जहाँ
हाथी और घोड़े की सवारी ।

शाम होते होते सब इक्क्ठे हो जाते थें ,
मिलकर अपने दुःख–सुख की बतियाते थे ।
बैठे–बैठे जमघट मे सबको
घंटो बीत जाते थे ।
अपनी उदासी को जहाँ हँसी मे बदल कर जाते थे ।

खाली पड़ा वह बरामदा अपना दुःख बता रहा है ,
सबकी किलकारियों के साथ वह भी
खिलखिलाना चाह रहा है ।
गये थे कुछ परिंदे यहां से बड़े होकर ,
अब वह सुना बरामदा उनके बचपन की
स्मृतियों को संजो रहा है ।

न्यूज कवरेज

कैमरे मे बंद न्यूज की ,
अब कवरेज दिखाई जा रही है ।
हादसे मे मरे थे दस–बीस लोग ,
लेकिन आकड़ो की संख्या 100 पार बताई जा रही है ।

समाचार से ज्यादा अखबारों मे भी ,
विज्ञापनो की भरमार है ।
किसी गरीब का सच दिखा नही सकते ,
पूंजीपतियों के सामने मेरे देश का मीडिया लाचार है ।

बीमारी से ज्यादा आदमी ,
बीमारी की खबरों से मर जाता है ।
फैलती है मौसमी वायरल की बीमारी ,
हमारा मीडिया उसे महामारी बताता है ।

दो देशो के आपसी युद्ध मे भी ,
ऐसे हालात् बन जाते है ।
मिसाइल चलने से भले ही कोई मरे या बच्चे ,
पर कमजोर दिल वाले समाचार से जरूर डर जाते है ।

बूढ़े होते जा रहे है गाँव

बूढ़े होते जा रहे है गाँव ,
जैसे कर रहे है किसी का इंतजार ।
वर्षो पहले गये थे कमाने शहर मे ,
गाँव से लोग चार ।

यहां की पुरानी हवेलिया पड़ी है सुन्नी ,
जैसे किसी का करना हों दीदार ।
चेतनाहीन सा हों गया है करनीकोट का बरगद का पेड़ ,
अब वहा कोई बच्चा नही खेलता , किसी भी तरह का खेल ।

सतोलिये के पत्थरो को भी ,
अब जंग सी लगती जा रही है ।
सब रहते है व्यस्त अपने कामो मे,
आपस मे मिलने की फुसरत किसी को नही मिल पा रही है ।

फिर भी यहां आकर अच्छा लगता है ,
मै अक्सर भूल जाती हु मेरे गमो को गाँव मे आकर ।
शहरों की इमारतो से कही अच्छा है बरगद का पेड़,
अच्छा लगता है उसकी ठांव पाकर ।

सपनो का बोझ (कविता)

सपनो का बोझ लिए हुए वह चल रहा था ,
वह अकेले ही सबसे निपट रहा था ।
यह मत करो , वहाँ मत जाओ ,
उन सबको वह कबसे सुन रहा था ।

उसकी भी कुछ इच्छाएं थी ,
उसके भी कुछ अरमान थे ।
उनका होना मायने नही रखता ,
पुरा करना परिजनों का फरमान था ।

अब उसकी जिंदगी उसकी ना थी ,
उसे पूरे करने घर वालों के सपने थे ।
सपनो को पुरा करने के लिए ,
पीछे छूट रहे कुछ उसके अपने थे ।

मै क्रिकेटर बनूंगा यह सपना उसने पाला था ,
इंजीनियर बनना तु यह घरवालों के आदेश का हवाला था ।
उसकी इच्छाएं उसके मन मे दबकर रह गई ,
सपनो के बोझ के से खुद की इच्छाए सिमट गई ।

भारत भूमि (कविता)

सरिता , सिंधु , हिम , दिवाकर ,
करता गौरव गान रत्नाकर ।
हर्षित होते सकल जन ,
भारत भूमि मे जन्म पाकर ।

कही गंगा , यमुना अपना नाद सुनाती है ,
कही कोशी ,महानंदा रौद्र रूप दिखाती है ।
कही गूँजती वेदो की ऋचाये,
कही अजान की आवाज आती है ।

कही महावीर स्वामी का अहिंसा परमो धर्म ,
कही गोविंद गुरु की सीख सिखाई जाती है ।
स्नेह प्रेम से रहते सब यहां ,
कही विद्वेषिता नही दिखाई देती है ।

नही द्वेष है आपस मे किसी का ,
सबसे भाईचारा, नेह, सम्मान यहाँ ।
वीरो के बलिदानो से गूंजते ,
मातृभूमि के गुणगान यहां ।

पत्थर–पत्थर , मिट्टी का हर कण,
शौर्य की गाथा गाता है ।
कही गूंजती राम नाम की धुन ,
कही कोई गीता का श्लोक सुनाता है ।

त्यौहारो की धूम यहां ,
हर मौसम इठलाता है ।
भारत की शान है तिरंगा ,
मुक्त गगन मे लहराता है ।

विश्वगुरु था वैदिक भारत ,
सोने की चिड़िया कहलाता था ।
दुनिया के प्रत्येक देश से विधार्थी ,
यहाँ अध्ययन करने आता था ।

साजन का दीदार

हम कब तुमसे उपहार मांगते है ,
हम तों थोड़ा सा प्यार मांगते है ।
मुमकिन है अगर तुम दे सको अपने हिस्से की खुशिया ,
हम तो तुमसे तुम्हारे गमो का व्यापार मांगते है ।

एक अरसा सा हों गया तुम्हे देखे हुए ,
इन आँखो से साजन का दीदार मांगते है ।
कही तुम बदल नही जाओ, बहक नही जाये तुम्हारे कदम ,
ताउम्र साजन के प्रेम का इजहार मांगते है ।

बैचेनी सी है अब तुम्हारे बिना ,
इसलिए दिल का करार मांगते है ।
विरह की अवधि पड़ रही है लम्बी ,
इन आँखो से साजन का दीदार मांगते है ।

मानसिकता का गुलाम

सुना है यहां शहर में काम ही काम है ,
जिंदगी की मुश्किलों को हल करने वाले रास्ते तमाम है ।
काम करने वाले को मिल जाता है पलभर में काम ,
निठल्ला आदमी यहां आकर भी नाकाम है ।

कोई दिन रात चला रहा है कुदाली ,
कोई काम ना करने वाली अपनी मानसिकता का गुलाम है ।
कोई सरकारी ओहदे के लिए कर रहा तैयारी ,
तों किसी के पास पद के साथ–साथ लगाम भी है ।

कोई चल रहा है तपती धूप में नंगे पाँव ,
तो किसी के पास सुविधा तमाम है ।
कोई अपनी इच्छाशक्ति से खुद को
कर रहा है बदलने की कोशिश ,
तो कोई अपनी मानसिकता का गुलाम है ।

ससुर जी

पहली बार जब मै ससुराल आई थी ,
बाबूजी कही तुम्हारे कदमो की आहट ना पाई थी ।
एक नजर भर घर को देखा
हार टंगी हुई तुम्हारी एक तस्वीर नज़र आई थी ।

पिता का दूसरा रूप होते है ससुर,
यह मम्मी ने बताया था ।
पर दूसरे पिता का सुख
कहा मेरे भाग्य में आया था ।

एहि ते अधिक धरमु नहिं दूजा।
सादर सासु ससुर पद पूजा ॥
रामचरितमानस की यह उक्ति
सास–ससुर के बारे में माताजी ने बतलाई थी ।

एक आँगन से जब कोई बेटी,
दूसरे घर में आती है ।
माँ–बाप के प्रतिरूप में वह ,
सास ससुर को देख पाती है ।

माँ तों नजर आई मुझे ,
पर तुम्हारी कही ठाह नहीं पाई ।
तुम्हारा आशीर्वाद ना पाकर बाबूजी,
मेरी आँखे भर आई ।

माँ

बिना मांगे भी चुपके से ,
एक और रोटी मेरी थाली में सरका देती है ।
वो मेरी माँ है जनाब ,
अपने हिस्से का खाना मुझे खिला देती है ।

पढ़ी लिखी नहीं है वो बिल्कुल भी ,
पर मेरी किताबों को ठिकाने पर सजा देती है ।
दुनियादारी की तमाम बाते ,
वह मुझे बातो ही बातो में सीखा देती है ।

ससुराल से जब कभी ,
मेरा मायके आना होता है ।
माँ प्यार से मुझे अपने पास बिठाती है ,
सुर्ख पड़े केंशुओ को वह कंघी से सजाती है ।

उदास चेहरा देखकर वह ,
वह मेरे दुःखो को जान जाती है ।
देकर मुझे अपने हिस्से की खुशिया ,
मेरे हिस्से का गम पी जाती है ।

देकर अपने हाथो की थपकिया,
तुमने बचपन में सुलाया था ।
सकल प्रेम संसार का माँ,
तुमसे ही पाया था ।

जीवन की इस उधेड़बून में,
मै जब भी कही खो जाती हु ।
कोई और रहे या ना रहे माँ,
मै तेरा साथ पथ पर पाती हु ।

खुशबु और ख़्याल तुम्हारा

तुम्हारी खुशबु से महक रहे है हम ,
तुम्हारे आने से चहक रहे है हम ।

दिल के हर कोने में यादे है तुम्हारी ,
तुम्हारे ना आने से बहक रहे थें हम ।

तुम किसी सितारों सी झिलमिलाती ,
किसी चाँद की तरह गहक रहे थें हम ।

उफ्फ तुम्हारी यादे ,और ये उल्फत ।
खुद को तुम पर लुटाते जा रहे थें हम ।

तुम्हारी मोहब्बत और तसव्वुर का ये आलम ,
बिना तेरे सबसे महरूम होते जा रहे है हम ।